अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ . उवासगदसाओ . अंतगडदसाओ
अणुत्तरोववाइयदसाओ . पण्हावागरणाइं . विवागसुयं

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ • उवासगदसाओ •
अंतगडदसाओ • अणुत्तरोववाइयदसाओ •
पण्हावागरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक : ९२५

मूल्य : ८०/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANGA SUTTĀNI

III

**NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWĀIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.**

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये ? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आछा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जग-मगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं— "धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्‌वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदसा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं और विवागसुयं—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियां हुई हैं। कुछ त्रुटियां मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध हैं। वे कब हुई यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५९ में बारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानांग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। बाईस तीर्थंकरों के युग में चातुर्याम धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहां था वह यहां आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। निशीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहां भी पात्र का प्रकरण है और यहां भी पात्र का प्रकरण है। काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचंकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है। पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है। यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएं हैं। यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां।
अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पज्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति। एवं सूत्र वृत्ति ९७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{१}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच में बावड़ी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिपि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनंत-हंसगणीनां उपदेशेन ॥ साह श्री सूरा लिखापितं ॥ जोसी पोपा लिखितं ॥ भ्राति उज्जल संजुक्त घीआ लिखापितं ॥छ॥छ॥१ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ. टब्बा

यह प्रति १२वें अध्ययन से आगे काम में ली गई है। •

२. उवासगदसाओ—

क. उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौड़ाई ३/४ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वगैरह नहीं है पर विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ है। अतः उसके आधार पर यह ११८६ से पहले की ही मालूम पड़ती है। •

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी में अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४१/४ इंच चौड़ा है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः श्रीः। •

३. अंतगडदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अंत में (पत्र संख्या २८५ में) लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार पत्रों से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए। •

ख. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की संयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन• संवत् १४६५ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त।

यह प्रति पंचपाठी है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०$\frac{१}{४}$ इंच तथा चौड़ाई ४$\frac{१}{४}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं। प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है। केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८९० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यरत्नसूरीणा॥

घ. यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। इसके पत्र २० हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति के बीच में टब्बा लिखा हुआ है। प्रति सुन्दर लिखी हुई है। पत्र की लम्बाई १० इंच व चौ० ४$\frac{१}{२}$ इंच है। प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं।

थली हमारौ देश है, रिणी हमारो ग्राम।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥
गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल।
बड़ो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥
बीकानेर ब्रहमान है, राजपुतानां नाम।
जंगलधर बादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २२३ से २२८ तक। विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है।

ख. गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है। इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं। प्रत्येक पत्र १३$\frac{१}{२}$ इंच लम्बा तथा ५$\frac{१}{२}$ इंच करीब चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं। प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है। उसके अनुसार यह प्रति १४९५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा बलिदत्तशोभः।
डागाभिधा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥
मुक्ताफलतुलां बिभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं।
तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्रुचिरजायत ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदन्वयस्याभरणं बभूव वांगाभिधानः सुविशुद्धबुद्धिः ।
विवेकसत्संगतिलोचनाभ्यां दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
तदंगजन्माजनि वाहडाख्यः सद्धर्मकर्मार्जनबद्धकक्षः ।
वक्षो यदीयं गुरुदेवभक्तिरलंचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
क्रमेण तद्वंशविशालकेतुः कर्मा विधः श्रावकपुंगवोभूत् ।
चित्रं कलावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चैः ॥५॥
तदंगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपमः ।
राजहंसगतिः शश्वच्चतुराननतां दधत् ॥६॥
तस्यार्हदंह्रियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
आसीदसामयशसः किल माल्हणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शंभोः ॥७॥
तत्कुक्षिप्रभवाबभुवुरभितोप्युद्योतयंतः कुलं,
चत्वारस्तनया नयार्जितधना नाभ्यर्थना भीरवः ।
आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यातः परो वर्द्धन-
स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमा भुवि ॥८॥
चत्वारोपि व्यधुरचरितां मर्त्यधात्रीरुहस्ते,
स्वौदार्येणातनुधनभृतो बांधवा धर्मकर्म ।
अन्योन्यं स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
गंगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनांह्रिलीना ॥९॥
तत्कुक्षिभूः श्रावक ऊदराज, आद्यो द्वितीयः किल बूट नामा ।
द्वावप्यभूतां गुरुदेवभक्तौ मंदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
ऊदाख्यस्य सभीरीति माऊ बूटस्य च प्रिया ।
आसधरो मंडनश्च तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
गंगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृतं पपौ ॥१२॥
आबाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरंतरं ।
एकादशांगसूत्राणि लेखयामास हर्षतः ॥१३॥
विजयिनि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
गुण[३] निधि[९] 'वार्द्धीदु'[१४] मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
गंगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वांगपुस्तकं ।
दत्तेस्म श्रीतपोरत्नोपाध्यायेभ्यः प्रमोदतः ॥१५॥
॥छ॥ श्रीः ॥

ग. हस्तलिखित प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र ९ तथा पृष्ठ १८ हैं। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ४० तक अक्षर हैं। प्रति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की लम्बाई १०$\frac{1}{2}$ इंच तथा चौड़ाई ४$\frac{1}{2}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य हैं--

।।छ।। अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छ।। श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाइं--

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ--

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{1}{2}$ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में बावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह--
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु।। लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{1}{2}$ इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक बावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ।छ।। श्री ।। छ।।०।। लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)--

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में बावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुल है।

च. मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

वव. यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनूं में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। बालावबोध पंचपाठी। पंक्तियां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है। •

६. विवागसुयं—

क. मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मुलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। कुछ पंक्तियां अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्राय: शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई १½ इंच है और तीन कोष्ठकों में लिखी हुई है। •

ख. **मूलपाठ—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १०½ तथा चौड़ाई ४½ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्राय: शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है:—

शुभं भवतु लेखकपाठकयो: ॥ संवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखितं ।छ॥ : । •

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मांगीलालजी बेंगानी बीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसयं अंगं समत्तं ॥ ग्रंथाग्र १२१६ ॥ टीका ६०० एतस्या ॥ लिपि संवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए। •

वृ. एम० सी मोदी तथा वी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १६३५, 'विवागसुयं।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्त्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएं हैं।[1]

जयधवला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलंक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।[2] आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएं' है। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।[3]

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वंश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ६४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ : ज्ञातृधर्मकथा।

३. (क) नंदीवृत्ति, पत्र २३०,३१ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथाः, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथाः पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायांगवृत्ति, पत्र १०८ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्वं संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्म्मकथाः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का अर्थ है——भगवान् महावीर की धर्मकथा[1]। वेवर के अनुसार जिस ग्रंथ में ज्ञातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है[2]। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवंशी महावीर की धर्मकथा'——यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है[3]। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उक्खित्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञान) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंडूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है——'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा——'तुम कूप-मंडूप जैसे हो।'

'वह कूप-मंडूप कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा——'कूए में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बढ़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंडूक ने कहा——तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा——मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंडूक ने पूछा——वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा——वह बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा——क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा——इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा——क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा——इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था[4]।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

---

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पत्र ६६०।
२. Stories From the Dharma of NAYA इं० एं० जि० १६, पृष्ठ ६६।
३. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।
(ख) नंदी, सूत्र ८५।
४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६,१८७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवां अंग है। इसमें दस उपासकों का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अध्ययन इसमें संकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। प्रथम अध्ययन में उन बारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-संहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यत: इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासकों की धार्मिक कसौटी की घटनाएं भी मिलती हैं। भगवान महावीर उपासकों की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषधोपवास, सचित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरंभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति[1]। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियां हैं। समवायांग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयधवला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

---

१. कसायपाहुड भाग १, पृष्ठ १२६, १३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं[1]। नंदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है[2]। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं[3]। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं[4]। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है[5]। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है[6]।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किंकष, चिल्वक और फाल अंबडपुत्र[7]। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कंबल, पाल और अंबष्ठपुत्र[8]। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९६ :······दस अज्झयणा सत्त वग्गा।

२. नंदी, सूत्र ८८······अट्ठ वग्गा।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्झयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽप्यष्ट वर्गाः, नन्द्यामपि तथा पठितत्वात्।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देसणकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्सक्खतो अंतकडदस त्ति।
   (ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था।

७. ठाणं, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है[1]। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है[2]। नंदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायांग और तत्त्वार्थवार्तिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से सर्वथा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कांपिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानांग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है[3]। इससे स्पष्ट होता है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायांग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

'अंतगड' शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु 'गड' का 'कृत' रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांच-कारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगड़ता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगड़ने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की शृंखला में बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

———

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ :······इत्येते दश वर्धमानतीर्थङ्करतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृतः दश अस्यां वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा।

२. कसायपाहुड भाग १ पृ० १३० : अंतयडदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण णिव्वाणं गदे सुदंसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि।

३. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३······ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयामः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है[1]। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है[2]। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है[3]। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है[4]। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त[5]।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र[6]।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है[7]।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है[8]। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८९ :······तिण्णि वग्गा।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

······इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिकः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा।

(ख) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३०।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्हं तित्थयराणं तित्थेसु अणुत्तर-विमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि।

४. समवाओ, पइण्णगसमवाओ ९७।

······दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा······।

५. ठाणं १०।११४।

६. तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३।

७. षट्खण्डागम १।१।२।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगार के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवां अंग है। समवायांग सूत्र और नंदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाइं' मिलता है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है[2]। समवायांग में 'पण्हावागरणदसासु'–यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायांग के अनुसार स्थानांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हवायरणं' और तत्त्वार्थवार्तिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है[3]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, संख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न[4]। इनमें वर्णित विषय का संकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायांग और नंदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-संवादों का वर्णन है[5]। नंदी मे इसके पैंतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानांग से उसकी

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८।
(ख) नंदी, सूत्र ९०।

२. ठाणं १०।११०।

३. (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ : पण्हवायरणं णाम अंगं···।
(ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० : ···प्रश्नव्याकरणम्।

४. ठाणं १०।११६:
पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उवमा, संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं।

५. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८:
पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।
(ख) नंदी, सूत्र ९०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पैंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है[1]।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण का वर्णन करता है[2]।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयधवला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्णि में उनका उल्लेख मिलता है[1]। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

---

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३, ७४ :
आक्षेपविक्षेपैर्हेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम्। तस्मिंल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः।

२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३१, १३२:
पण्हवायरणं णाम अंगं अक्खेवणी-विक्खेवणी-संवेयणी-णिव्वेयणीणामाओ चउव्विहं कहाओ पण्हादो णट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुखदुक्ख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि।

१. नंदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवां अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुयं' है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है[2]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अंड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोद्दाह-आमरक और कुमार लिच्छवी[3]। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९९।
   (ख) नंदी, सूत्र ९१।
   (ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।
   (घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।

२. ठाणं १०।११०।

३. ठाणं १०।१११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्‌रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāngī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.[1]

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmmakahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāthadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛidharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'[2]. Āchārya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutasakandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.[3]

The family name of lord Mahavīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.[4] They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātṛiwanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ'.[5] But, on the account found in the Samwāyānga and the Nandi, the meaning

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 94.
2. Tatwartha Vartika, 1/20.
3. (a) Nandivritti, pages 230-31.
   (b) Samawayanga Vritti, page 108.
4. Jain sahitya ka Pitihas, Purwa-Pithika, page 660.
5. Stories from the Dharma of NAYA, I.A., Vol. 19, page 66.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.[1] The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajṇāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have came from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well[2].

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
   (b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāngī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramaṇū order the laymen serving the Śramaṇas are called Śramaṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramaṇopāsaka Anand was consecreted and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidently, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saćitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaćarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati[1]. The Śrāwakas, beginning from

1. Kasyapahuda, part i, pages 129-30.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASĀO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasāo'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas[1]. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it[2]. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas[3]. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas[4]. The Chūrṇikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasāo' as it has ten Adhyayanas in the first Varga[5]. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also[6].

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

---

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
2. Nandi Sutra, 88.
3. Samwayanga Vritti, page 112.
4. Samawayanga Vritti, page 112.
5. (a) Nandi with Churni, page 68.
   (b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣhthaputtra.[1] These headings are fou d in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila,Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambaṣthaputtra. Samawayanga mentions ten adhayans without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛīta Kewalīs, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.[2] The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavrātıka. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavarṭika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above- said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Aćala Kāmpilya, Akśetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhayadeva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'[3]. This shows that the 'Vāćnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vāćnā ' found in the 'Samawāyānga'.

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dīkśā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occured with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

1. Tatwarthavarṭika 1/20
2. Tatwarthavartika 1/20.
3. Sihany Vritti.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavīra had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśangī. As it containsten Adhyayanas regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Aṇuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas[1]. The Sthānānga quotes only ten Adhyayanas.[2] According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.[3] The Samawāyānga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.[4] But the headings of the ten Adhyayanas have not been given in it. According to the Sthānānga and the Tattwārthavārttika they read as, Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta[5], and as Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātībhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattawārthavārttika.[6] In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda[7].

The present form of the Āgama is different from the 'Vaćna' of the Sthānāga and the Samawāyānga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaćna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanas, such

1. Nandi, Sutra, 89.
2. Thanam, 10/114.
3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.
4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.
5. Thanam 10/114.
6. Tattwarthvarttika 1/20.
7. Satkhundagama 1/1/2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

as Dhanya, Sunakshtra and Riṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛeṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Aṇagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PAṆHĀWĀGARAṆĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāngī. Its title has been mentioned as 'Paṇhāwāgaraṇāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī.[1] Its name is found as 'Paṇhāwāgaradasāo'[2] in the Sthānānga and the same reads as 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' in the Samawāyānga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Paṇhāwāyaraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.[3]

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānānga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā. Riṣibhāṣita, Āćāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Kṣaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.[4] The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.[5]

The Nandi notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanas.

---

1. (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra 90.
2. Thanam, 10/110.
3. (a) Kasayapahuda pt. I, page 131.
   (b) Tatwarthavarttika 1/20.
4. Thanam 10/116.
5. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra, 90.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

But, from its 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama. The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāśita, Āćārya-bhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praṣna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could he spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama, depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.[1]

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.[2]

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaćarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Aćaurya, Brhmaćarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Āćārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepanī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Āćarya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.[3] Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

---

1. Tattwarthavarttika 1/20.
2. Kasayapahuda part I, page 131.
3. Nandi Sutra with the Curni on page 12.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāngī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it. therefore the title 'Vivāgasuyam.'[1] The Sthānānnga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'[2]

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānānga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛigāputra, Gotrāsa, Aṇḍa, Sakata, Māhan, Nandiṣeṇa, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licćhavī. These headings have been taken from some other 'Vaćna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras in not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āćaryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

---

1. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99
   (b) Nandi Sutra 91.
   (c) Tattawarthavarttika 1/20
   (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132.
2. Thanam 10/110.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Ācārya Tulasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

पढमं अज्झयणं — **सू० १-८६** — **पृ० ३९५-४२०**

उक्खेव-पदं १, आणंदगाहावइ-पदं ८, महावीर-समवसरण-पदं १७, आणंदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं २३, अतियार-पदं ३१, आणंद-अभिग्गह-पदं ४५, सिवणंदाए वंदणट्ठ-गमण-पदं ४६, सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं ५१, गोयम-पुच्छा-पदं ५३, भगवओ जणवय-विहार-पदं ५४, आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं ५५, सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं, ५६, आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं ५७, आणंदस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं ६१, आणंदस्स अणसण-पदं ६५, आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं ६६, गोयमस्स आगमण-पदं ६७, आणंद-गोयम-संवाद-पदं ७६, भगवओ उत्तर-पदं ८१, गोयमस्स खामणा-पदं ८२, भगवओ जणवयविहार-पदं ८३, आणंदस्स समाहिमरण-पदं ८४, निक्खेव-पदं ८६ ।

बीयं अज्झयणं — **सू० १-५७** — **पृ० ४२१-४३९**

उक्खेव-पदं १, कामदेवगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, कामदेवस्य गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कामदेवस्य समणोवासयग-चरिया-पदं १६, भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, काम-देवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पदं २०, कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पदं २८, कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्ग-पदं ३४, देवरूव-विउव्वण-पदं ४०, कामदेवस्स पडिमा-पारण-पादं ४१, कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं ४२, भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं ४५, भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं ४६, कामदेवस्स पडिगमण-पदं ४८, भग-वओ जणवयविहार-पदं ४९, कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं ५०, कामदेवस्स अणसण-पदं ५४, कामदेवस्स समाहिमरण-पदं ५५, निक्खेव-पदं ५७ ।

तइयं अज्झयणं — **सू० १-५३** — **पृ० ४४०-४५३**

उक्खेव-पदं १, चुलणीपियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७ चुलणीपियस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, सामाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, चूलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं १८, चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेट्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणी-यसपुत्त ३३, °भद्दासत्थवाही ३९, चूलणीपियस्स कोलाहल-पदं ४२, भद्दाए पसिण-पदं ४३, चुलणीपियस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं ४७, चूलणीपियस्स अणसण-पदं ५१, चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

चउत्थं अज्झयणं — **सू० १-५३** — **पृ० ४५४-४६६**

उक्खेव-पदं १, सुरादेवगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, सुरादेवस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेट्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सोलस-रोगायंक ३६, सुरादेवस्स कोलाहल-पदं ४२, धन्नाए पसिण-पदं ४३, सुरादेवस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं ४७, सुरादेवस्स अणसण-पदं ५१, सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ । •

पंचमं अज्झयणं सू० १-५४ पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पदं १, चुल्लसययगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, चुल्लसययस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुल्लसयतस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं १८, चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेट्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °हिरण्णकोडीविप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पदं ४२, बहुलाए पसिण-पदं ४३, चुल्लसयगस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४ , चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं ४७, चुल्लसयगस्स अणसण-पदं ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५४ । •

छट्ठं अज्झयणं सू० १-४२ पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पदं १, कुंडकोलियगाहावइ-पदं २, महावीर समवसरण-पदं ७, कुंडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कुंडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं १८, कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २१, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं २२, कुंडको-लिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २३, देवस्स पडिगमण-पदं २४, महावीर-समवसरण-पदं २५, महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परूवण-पदं २८, महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा-पद २६, भगवओ जणवयविहार-पदं ३२, कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं ३३, कुंडकोलियस्स उवासगपडिमा-पदं ३५, कुंडकोलियस्स अणसण-पदं ३६, कुंडकोलियस्स समाहिमरण-पदं ४०, निक्खेव-पदं ४२ । •

सत्तमं अज्झयणं सू० १-८६ पृ० ४६०-५१३

उक्खेव-पदं १, सद्दालपुत्त-पदं २, सद्दालपुत्तस्स देवसंदेस-पदं ८, सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं ११, महावीर-समवसरण-पदं १२, महावीरस्स देवसंदेस-विरूवण-पदं १७, सद्दालपुत्तस्स निवेदण-पदं १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं १६, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं २८, अग्गिमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पदं ३३, अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं ३७, भगवओ जणवयविहार-पदं ३६, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पदं ४०, अग्गिमित्ताए समणोवासियचरिया-पदं ४१, गोसालस्स आगमण-पदं ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-कित्तण-पदं ४४, विवाद-पट्ठवणा-पसिण-पदं ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं ५४,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्तस्स देवरूव-कय-उवसग्ग-पदं ५६, °जेट्ठपुत्त ५७, °मज्झिमपुत्त ६३, °कणीय-सपुत्त ६६, °अग्गिमित्ताभारिया ७५, सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पदं ७८, अग्गिमित्ताए पसिण-पदं ७६, सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं ८०, पायच्छित्त-पदं, ८१, सद्दालपुत्तस्स उवासग-पडिमा-पदं ८३, सद्दालपुत्तस्स अअसण-पदं ८७, सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं ८८, निक्खेव-पदं ८६।

अट्ठमं अज्झयणं — सू० १-५४ — पृ० ५१४-५२६

उक्खेव-पदं १, महासतयगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ८, महासतयस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पदं १४, महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, भगवओ जणवयविहार-पदं १७, रेवतीए चिंता-पदं १८, रेवतीए सवत्ती-उद्दवण-पदं १६, रेवतीए मंसमज्जासायण-पदं २०, अमाघाय-पदं २१, महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं २५, महासतगस्स अणुकूल-उवसग्ग-पदं २७, महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं ३२, महासतगस्स अणसण-पदं ३६, महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं ३७, महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग्ग-पदं ३८, महासतगस्स विक्खेव-पदं ४१, महावीर-समवसरण-पदं ४४, महासतगस्स अंतिए गोतम-पेसण-पदं ४६, गोतमस्स आगमण-पदं ४७, महासतगस्स वंदण-पदं ४८, महावीरुत्तस्स कहण-पदं ४६, महासतगस्स पायच्छित्त-पदं ५०, गोयमस्स पडिणिक्खमण-पदं ५१, भगवओ जणवयविहार-पदं ५२, महासतगस्स अणसण-पदं ५३, निक्खेव-पदं ५४।

नवमं अज्झयणं — सू० १-२७ — पृ० ५२७-५३१

उक्खेव-पदं १, नंदिणीपियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, नंदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, नंदिणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, नंदणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं १८, नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं २०, नंदिणीपियस्स अणसण-पदं २४, नंदिणी-पियस्स समाहिमरण-पदं २५, निक्खेव-पदं २७।

दसमं अज्झयणं — सू० १-२७ — पृ० ५३२-५३७

उक्खेव-पदं १, लेइयापितागाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, लेतियापियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं १८, लेतियापियस्स उवासगपडिमा-पदं २०, लेतियापियस्स अणसण-पदं २४, लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं २५, निक्खेव-पदं २७।

संकेत निर्देशिका

• ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्ति के प्रारम्भ में भरा बिन्दु [•[और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें-पृष्ठ २ सू ६।

[?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।

' ' ये दो या इससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।

✕ क्राश [✕] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।

'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।

क, ख, ग, घ, च, छ, ब, देखें—सम्पादकीय में 'प्रति-परिचय' शीर्षक।

'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३९६ टिप्पण १।

'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें-पृष्ठ ५२९ टिप्पण १।

अं० अंतगडदसाओ।

अ० अणुत्तरोववाइयदसाओ।

उवा० उवासगदसाओ।

ओ० ओवाइयं।

ना० नायाधम्मकहाओ।

भ०, भग०, भगवई।

राय० रायपसेणइयं।

पण्हा० पण्हावागरणाइं।

वि० विवागसूयं।

सूय० सूयगडो।

जंबू० जंबूदीवपण्णत्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं

आणंदे

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम[1] नयरी होत्था[2]—वण्णओ[3] ।।

२. पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[4] ।।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं[5] •समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, चंपानयरीए बहिया

---

१. नामं (ख) ।

२. हुत्था (ग) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. स० पा०—समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जंबू रज्जुवासमाणे । असौ बिन्दुमध्यवर्ती पाठः क्रमशः रायपसेणइय-ओवाइय-सूत्राभ्यां पूरितः । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'नायाधम्मकहाओ' सूत्रात् पूरणस्य सूचना कृतास्ति । अस्माभिः पूरिते पाठे ततः किञ्चिद् भेदो विद्यते, नास्ति क्वचिद् मौलिको भेदः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव[1] गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वइररिसहणाराय-संघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५. तए णं से अज्जजंबू नामं अणगारे जायसड्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजाय-कोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे० पज्जुवासमाणे[2] एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं[4] छट्ठस्स अंगस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अंगस्स उवासगदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

आणंदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावइकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए, नंदिणीपिया लेइयापिता[7] ॥१॥

---

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितं पदम् ।
२. पज्जुवासइ (क) ।
३. ना० १।१।७ ।
४. संपाविउकामेणं (समावओ १।२) ।
५,६. ना०१।१।७ ।
७. लेतियःपिया (क, ग); सालेइणीपिया (ख) । उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
आणंदे कामदेवे अ, गाहावतिचूलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए णदिणीपिया सालेइया-पिता । (स्थानांग १०।११२) । स्थानांग-सूत्रे दशमाध्ययनस्य नाम 'सालेइयापिता' लभ्यते । अत्र एकस्यां प्रतौ 'सालेइणीपिया' नाम उपलब्धमस्ति, किन्तु 'सालइयापिता' नाम नोपलभ्यते । स्यादसौ वाचनाभेदः अथवा लिपिदोषेणासौ विपर्ययो जातः; इति अनुसंधेयमस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

आणंदगाहावइ-पदं

८. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[3] ॥

९. तस्स वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं दूइपलासए नामं चेइए[4] ॥

१०. तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था—वण्णओ[5] ।

११. तत्थ णं वाणियगामे नयरे आणंदे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[6] •दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवण-सयणासण-जाणवाहणे बहुधण-जायरूव-रयए आओग-पओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुजणस्स° अपरिभूए ॥

१२. तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, 'चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ'[7] चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

१३. से णं आणंदे गाहावई बहूणं राईसर[8]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु[9] य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं 'कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए'[10] सव्वकज्जवड्ढावए[11] यावि होत्था ॥

१,२. ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. चेतिते (क); चेइए होत्था (घ) ।

५. ओ० सू० १४ ।

६. सं० पा०—अड्ढे जाव अपरिभूए ।

७. × (क) ।

८. ईसर (क,ख,ग); ईसराणं (घ); राईसर (ओ० सू० १८) । सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाणं ।

९. यद्यपि सर्वास्वपि प्रतिषु 'मंतेसु य कुडुंबेसु य' इति पाठो लभ्यते, किंतु अर्थसंगत्या 'कुडुंबेसु य मंतेसु य' इति पाठ उपयुक्तोस्ति । ज्ञाता (१।१६) सूत्रे तथा रायपसेणइय (६७५) सूत्रेपि इत्थमेवपाठो विद्यते । ज्ञातावृत्तौ अर्थसंगतिरित्थं कृतास्ति—कुटुम्बेषु च स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु च मंत्रादयो निश्चयान्तास्तेषु आप्रच्छनीयः ।

१०. कुडुंबस्स मेढीभूए (क,ग); कुडुंबस्स मेढी-भूए जाव (ख) ।

११. मेढीभूते सव्व° (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स सिवणंदा[1] नामं भारिया होत्था—अहीण[2]-•पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा° सुरूवा, आणंदस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणंदेणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे[3] •सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे° पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

१५. तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ णं कोल्लाए[4] नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमिए[5] जाव[6] पासादिए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

१६. तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे आणंदस्स गाहावइस्स बहवे[7] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणे परिवसइ—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे[9] जाव[10] •जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥

१८. परिसा निग्गया ॥

१९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[11] पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं से आणंदे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे[12] •भगवं महावीरे[13] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स बहिया दूइपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं

---

१. सिवानंदा (ख,घ)।
२. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवा।
३. सं० पा०—इट्ठे जाव पंचविहे।
४. कोलाते (क,ग)।
५. रिद्धित्थमिए (ख)।
६. ओ० सू० १।
७. बहुवे (ग)।
८. उवा० १।११।
९. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए।
१०. ओ० सू० १६, २२।
११. ओ० सू० ५३-६६।
१२. सं० पा०—समणे जाव विहरइ तं महा-फलं गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि।
१३. पू०—ओ० सू० ५२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए[1] •कयबलिकम्मे कय-कोउय मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं 'पवर परिहिए'[2] °अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे 'सयाओ गिहाओ'[3] पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहार-चारेणं 'वाणियगामं नयरं'[4] मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दूइपलासए[5] चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ[6] •वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे° पज्जुवासइ ॥

२१. तए णं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[7] धम्मं परिकहेइ ॥

२२. परिसा पडिगया, राया य गए[8] ॥

आणंदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

२३. तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[9]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता° एवं वयासी—सद्दहामि णं[10] •भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !° हेयं तुब्भे वदह[11]। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए

---

१. सं० पा०—ण्हाए सुद्धप्पावेसा अप्प°।

२. अत्र नायाधम्मकहाओ (१।१।३३) सूत्रे 'पवर परिहियाओ' पाठो विद्यते। तत्र वृत्तौ—प्रवरमिहानुस्वारलोपो दृश्यः, इति व्याख्यातमस्ति। एतत् उपयुक्तं प्रतिभाति।

३. सयातो गिहातो (ग)।

४. वाणियागामं नगरं (क)।

५. °पलासे (क,ग)।

६. सं० पा०—णमंसइ जाव पज्जुवासइ।

७. ओ० सू० ७१-७७।

८. पडिगओ (क); गया (ख)।

९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी।

१०. सं० पा०—सद्दहामि णं जाव से जहेयं।

११. वदह त्ति (क); वदह त्ति कट्टु (ख,ग,घ); रायपसेणइयसूत्रे (६६५) अत्र किञ्चि-दधिकः पाठो लभ्यते—त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे[1] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं• पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं[2] पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि[3] ।।

२४. तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए तप्पढमयाए[4] थूलयं[5] पाणाइवायं पच्चक्खाइ[6] जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ।।

२५. तयाणंतरं[7] च णं थूलयं[8] मुसावायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ।।

२६. तयाणंतरं च णं थूलयं[9] अदिण्णादाणं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ।।

२७. तयाणंतरं च णं सदारसंतोसीए[10] परिमाणं करेइ—नन्नत्थ एक्काए सिवनंदाए भारियाए, अवसेसं[11] सव्वं मेहुणविहिं[12] पच्चक्खाइ ।।

२८. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणं करेमाणे—

(१) हिरण्ण-सुवण्णविहिपरिमाणं[13] करेइ—नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं, चउहिं वड्ढिपउत्ताहिं, चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्ण-सुवण्णविहिं पच्चक्खाइ[14] ।

---

१. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइत्तए।

२. गिहिधम्मं (क,ख,ग,घ)। दिग्व्रत-शिक्षाव्रतानामतिचारनिरूपणप्रसंगे वृत्तिकारेण समालोच्यपाठः समुद्धृतोस्ति। तत्र व्रतग्रहणसंकल्पावसरे व्रतग्रहणानन्तरं च उभयत्रापि 'सावगधम्मं' इति पाठो विद्यते, यथा—"कथमन्यथा प्रागुक्तं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामीति ? कथं वा वक्ष्यति—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जति त्ति" (वृ), अग्रिमस्थलेषु 'गिहिधम्मं' इत्येवपाठः प्रतिषु लभ्यते। तत्र वृत्तौ नास्ति काचिद् व्याख्या, तेन क्वचित्-क्वचित् 'गिहिधम्मं' पाठोऽपि स्वीकृतः। नानयोः कश्चिद् अर्थभेदोस्ति।

३. करेइ (घ)।

४. °मताते (ग)।

५. थूलं (क)।

६. पच्चक्खामि (ख,ग,घ)।

७. तदा° (ग)।

८. थूलं (क)।

९. थूलं (क,ग); थूलगं (घ)।

१०. °संतोसिए (क,ख); °संतोसिते (ग,घ); ३५ सूत्रे इकारस्य दीर्घत्वं लभ्यते।

११. असेसं (क)।

१२. मेधुन° (क); मेथुण° (घ)।

१३. सुवण्णपरिमाणं (ग,घ)।

१४. पच्चक्खामि (ख,ग) अग्रे सर्वत्रापि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) तयाणंतरं च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वएहिं[1] दसगोसाहस्सिएणं वएणं[2], अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खाइ।

(३) तयाणंतरं च णं खेत्त-वत्थुविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं हलसएहिं नियत्तणसतिएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्त-वत्थुविहिं पच्चक्खाइ।

(४) तयाणंतरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं सगडसएहिं[3] दिसायत्तिएहिं, पंचहिं सगडसएहिं संवहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं[4] पच्चक्खाइ।

(५) तयाणंतरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं संवहणिएहिं[5], अवसेसं सव्वं वाहणविहिं[6] पच्चक्खाइ॥

२६. तयाणंतरं च णं उवभोग-परिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे—

(१) उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ 'एगाए गंधकासाईए'[7], अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खाइ।

(२) तयाणंतरं च णं दंतवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं[8], अवसेसं सव्वं[9] दंतवणविहिं पच्चक्खाइ।

(३) तयाणंतरं च णं फलविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं सव्वं फलविहिं पच्चक्खाइ।

(४) तयाणंतरं च णं अब्भंगणविहिपरिमाणं[10] करेइ—नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं[11], अवसेसं सव्वं अब्भंगणविहिं पच्चक्खाइ॥

(५) तयाणंतरं च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं[12] करेइ—नन्नत्थ एगेणं सुरभिणा गंधट्टएणं[13], अवसेसं सव्वं उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खाइ।

(६) तयाणंतरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं[14]

---

१. वतेहिं (ग)।

२. वतेणं (ग)।

३. सगडसागडेहिं (क); सगडीसएहिं (ख)।

४. सगडविहं (घ)।

५. संवा० (ख)।

६. वहण० (क)।

७. एगाते गंधकासातीते (क,ग)।

८. अल्ललट्ठी० (ग)।

९. × (क,ग)। अनयोरादर्शयोरस्मे सर्वत्रापि 'सव्वं' पाठो नास्ति। अत्र लिपेः संक्षेपीकरणमेव कारणं संभाव्यते।

१०. अब्भिं० (घ)।

११. तिल्लेहिं (घ)।

१२. उव्वट्टण (क्व)।

१३. गंधवट्टएणं (क,ख,घ)। एतत् परिवर्तनं संभवतो लिपिदोषेण जातम्। वृत्तौ अस्य मौलिकं रूपं सुरक्षितमस्ति, यथा—गन्धद्रव्याणामुपलकुष्ठादीनाम्, 'अट्टओ' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम्। स्थानांगे (३।८७) पि 'गंधट्टएणं' इति प्रयोगो लभ्यते।

१४. उव्वट्टिएहिं (क)। उद्वर्तितैः इति विशेषणेन अरघट्टपरिवर्तिभिः उदकघटैः इत्यर्थः सूच्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'उदगस्स घडेहिं'[1], अवसेसं सव्वं मज्जणविहिं पच्चक्खाइ ।

(७) तयाणंतरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ—'नन्नत्थ एगेणं'[2] खोमजुयलेणं, अवसेसं सव्वं वत्थविहिं पच्चक्खाइ ।

(८) तयाणंतरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अगरु[3]-कुंकुम-चंदणमादिएहिं[4], अवसेसं सव्वं विलेवणविहिं पच्चक्खाइ ।

(९) तयाणंतरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेण[5] वा, अवसेसं सव्वं पुप्फविहिं पच्चक्खाइ ।

(१०) तयाणंतरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममुद्दाए य, अवसेसं सव्वं आभरणविहिं पच्चक्खाइ ।

(११) तयाणंतरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अगरु[6]-तुरुक्क-धूवमादिएहिं, अवसेसं सव्वं धूवणविहिं पच्चक्खाइ ।

(१२) तयाणंतरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे—

(क) पेज्ज-विहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अवसेसं सव्वं पेज्जविहिं पच्चक्खाइ ।

(ख) तयाणंतरं च णं भक्खविहिपरिमाणं[7] करेइ—नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खंडखज्जएहिं वा, अवसेसं सव्वं भक्खविहिं[8] पच्चक्खाइ ।

(ग) तयाणंतरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ कलमसालि-ओदणेणं, अवसेसं सव्वं ओदणविहिं पच्चक्खाइ ।

(घ) तयाणंतरं च सूवविहिपरिमाणं[9] करेइ—नन्नत्थ कलायसूवेण[10] वा 'मुग्गसूवेण वा माससूवेण'[11] वा अवसेसं सव्वं सूवविहिं पच्चक्खाइ ।

(ङ) तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ सारदिएणं गोघय-मंडेणं, अवसेसं सव्वं घयविहिं पच्चक्खाइ ।

(च) तयाणंतरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ वत्थुसाएण[12] वा तुंबसाएण वा सुत्थियसाएण[13] वा मंडुक्कियसाएण वा, अवसेसं सव्वं सागविहिं पच्चक्खाइ ॥

---

१. उदगघडेहिं (क) ।
२. नन्नत्थेक्केणं (क,ग) ।
३. अगुरु (क,घ) ।
४. °मातितेहिं (क); माइतेहिं (घ) ।
५. मालई° (घ) ।
६. अगुरु (क, घ) ।
७. भक्खण° (ख) ।
८. भक्खण° (क,ख) ।
९. सूय° (क,ग,घ) ।
१०. कालाय° (क) ।
११. मुग्गमाससूवेण (क) ।
१२. वुसातेण (क); वत्थुसातेण (ग); चुच्चुसाएण (घ) ।
१३. सुत्थिया° (ग); सूवत्थिय° (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(छ) तयाणंतरं च णं भाहुरयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं पालंकामाहुरएणं[1], अवसेसं सव्वं भाहुरयविहिं पच्चक्खाइ ।

(ज) तयाणंतरं च णं तेमणविहिपरिमाणं[2] करेइ—नन्नत्थ सेहंब-दालियंबेहिं, अवसेसं सव्वं तेमणविहिं पच्चक्खाइ ।

(झ) तयाणंतरं च णं पाणियविहिपरिमाणं[3] करेइ—नन्नत्थ एगेणं अंतलिक्खोदएणं, अवसेसं सव्वं पाणियविहिं पच्चक्खाइ ।

(ञ) तयाणंतरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचसोगंधिएणं[4] तंबोलेणं, अवसेसं सव्वं मुहवासविहिं पच्चक्खाइ ॥

३०. तयाणंतरं च णं चउव्विहं अणट्ठादंडं[5] पच्चक्खाइ, तं जहा—१. अवज्झाणाचरितं[6] २. पमायाचरितं[7] ३. हिंसप्पयाणं ४. पावकम्मोवदेसे ॥

अतियार-पदं

३१. आणंदाइ[8] ! समणे भगवं महावीरे आणंदं समणोवासगं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! समणोवासएणं[9] अभिगयजीवाजीवेणं[10] •उवलद्धपुण्णपावेणं आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसलेणं असहेज्जेणं, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ° अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पंच 'अतियारा पेयाला'[11] जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. संका २. कंखा ३. वितिगिच्छा[12] ४. परपासंडपसंसा ५. परपासंडसंथवो[13] ॥

३२. तयाणंतरं च णं थूलयस्स पाणाइवायवेरमणस्स[14] समणोवासएणं 'पंच अतियारा

---

१. °माचुरतेणं (क); °माधुरतेणं (ग) ।

२. जेवण° (क); जेमण° (ख,ग,घ) । 'तेमण' इति पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । 'ग' प्रतौ वारद्वयमपि जेमण' शब्दस्य जकारोपरि सूक्ष्माक्षरेण 'ते' इति लिखितमस्ति ।

३. पाणित° (ग) ।

४. °सोगंधितेणं (ग); °सोगधेणं (घ) ।

५. अनत्थ° (ख) ।

६. °यरियं (ख) ।

७. °यरियं (क,ख) ।

८. °दि (क); °ति (ग) ।

९. °वासतेणं (ग,घ) ।

१०. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवेणं जाव अण-इक्कमणिज्जेणं ।

११. अतियारपेयाला (क,ग); अतिचारा पेयाला (घ) । पेयालत्ति साराः प्रधानाः स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वात् (उवासगदसाओ वृत्ति); पेयालं प्रेज्जल पमाणम्मि (देशीनाममाला ६।५७) ।

१२. °गिच्छा (क) ।

१३. शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः (तत्त्वार्थसूत्र ७।१८) ।

१४. पाणायिवाय° (क); पाणादिवाय° (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेयाला"[१] जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. बंधे २. वहे ३. छविच्छेदे[२] ४. अतिभारे[३] ५. भत्तपाणवोच्छेदे[४] ।।

३३. 'तयाणंतरं च ण 'थलयस्स मुसावायवेरमणस्स"[५] समणोवासएणं 'पंच अतियारा"[६] जाणियव्वा"[७], न समायरियव्वा, तं जहा—१. सहसाभक्खाणे[८] २. रहस्सब्भक्खाणे[९] ३. 'सदारमंतभेए ४. मोसोवएसे"[१०] ५. कूडलेहकरणे ।।"[११]

३४. तयाणंतरं च णं थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. तेणाहडे २. तक्करप्पओगे[१२] ३. विरुद्धरज्जातिक्कमे ४. कूडतुल[१३]-कूडमाणे ५. तप्पडिरूवगववहारे ।।

३५. तयाणंतरं च णं सदारसंतोसीए समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. इत्तरियपरिग्गहियागमणे[१४] २. अपरिग्गहियागमणे ३. अणंगकिड्डा[१५] ४. परवीवाहकरणे[१६] ५. 'कामभोगे तिव्वाभिलासे"[१७] ।।

३६. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच[१८] अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. खेत्तवत्थुपमाणातिक्कमे २. हिरण्णसुवण्णपमाणातिक्कमे ३. धणधण्णपमाणातिक्कमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे ५. कुवियपमाणातिक्कमे ।।

---

१. पंचतियारपेयाला (क), पंचतियारा पेयाला (ख) ।
२. °च्छेए (क,ख,घ) ।
३. अयि° (क), अइ° (ख,घ) ।
४. °वोच्छेए (क,ख); °बोच्छेए (घ) ।
५. थूलगमुसावाय° (क,ग,घ) ।
६. पंचतियारा (क,ग,घ) । अस्मिन् सूत्रे तथा उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्दः साक्षात् लिखितो नास्ति ।
७. थूलगमुसावायस्स पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—कण्णालियं, गोवालियं, भोमालियं, णासावहारो, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे । थूलगमुसावायस्स पंच अतियारा जाणियव्वा (ख) ।
८. सहसब्भक्खाणे (क)
९. रहसब्भक्खाणे (क); रहसाभक्खाणे (ख,घ) ।
१०. मोसोवएसे सदारमंतभेए (क) ।
११. वाचनान्तरे तु- कन्नालीयं, गवालीयं, भूमालियं, नासावहारं, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे त्ति पठ्यते । "आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषावादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थः संभाव्यते—एत एव प्रमादसहसाकाराऽनाभोगैरभिधीयमाना मृषावादविरतेरतिचाराः भवन्त्याकुट्या च भंगा इति (वृ) ।
१२ तक्करपओगे (क,घ) ।
१३. कूडतुल्ल (घ) ।
१४. इत्तिरिय° (क,ग) ।
१५. °कीडा (ख,घ) ।
१६. परविवाह° (क्व) ।
१७. कामभोगे तिव्वाभिनिवेसे (क); कामभोएसु तिव्वाभिनिवेसे (ख) ।
१८. इमे पंच (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. [1]तयाणंतरं च णं दिसिव्वयस्स[2] समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा १. उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे[3] २. अहोदिसिपमाणातिक्कमे ३. तिरियदिसिपमाणातिक्कमे ४. खेत्तवुड्ढी ५. सतिअंतरद्धा[4] ।।

३८. तयाणंतरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—'भोयणओ कम्मओ य'[5] ।

भोयणओ[6] समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. सचित्ताहारे २. सचित्तपडिबद्धाहारे ३. अप्पउलिओसहिभक्खणया[7] ४. दुप्पउलिओसहिभक्खणया ५. तुच्छोसहिभक्खणया ।

कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं, न समायरियव्वाइं, तं जहा— १. इंगालकम्मे २. वणकम्मे ३. 'साडीकम्मे ४. भाडीकम्मे ५. फोडीकम्मे'[8] ६. दंतवाणिज्जे[9] ७. लक्खवाणिज्जे ८. रसवाणिज्जे ९. विसवाणिज्जे १०. केसवाणिज्जे ११. जंतपीलणकम्मे १२. निल्लंछणकम्मे १३. दवग्गिदावणया १४. सरदहतलागपरिसोसणया[10] १५. असतीजणपोसणया[11] ।।

३९. तयाणंतरं च णं अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. कंदप्पे २. कुक्कुइए[12] ३. मोहरिए ४. संजुत्ताहिकरणे ५. उवभोगपरिभोगातिरित्ते[13] ।।

---

१. वृत्तिकृता अत्र एकं महत्त्वपूर्णं सूचनं कृतमस्ति दिग्व्रतं शिक्षाव्रतानि च यद्यपि पूर्वं नोक्तानि तथापि तत्र तानि द्रष्टव्यान्यतिचारभणनस्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति, कथमन्यथा प्रागुक्तम्—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामीति ? कथं वा वक्ष्यति—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ इति, अथवा सामायिकादीनामित्वरकालीनत्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वात् न तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान्, दिग्व्रतं च विरतेरभावात् उचितावसरे तु प्रतिपत्स्यते इति भगवतस्तदतिचारवर्जनोपदेशनमुपपन्नम् । यच्चोक्तं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपत्स्ये, यच्च वक्ष्यति द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, तद् यथा कालं तत्करणाभ्युपगमादनवद्यमवसेयम् (वृ) ।

२. दिसि विदिसि (ख,घ) ।

३. उड्ढदिसाइक्कमे (वृपा) ।

४. सइ० (ख, घ) ।

५. भोयणओ य कम्मओ य (क); भोयणतो कम्मतो (ख) ।

६. तत्थ णं भोयणओ (ख) ।

७. व्या० वि०—अप्पउलि+ओसहि०=अप्पउलिओसहि० ।

८. साडीकम्मे य भाडीकम्मे य फोडीकम्मे य (ख) ।

९. 'दंतवाणिज्जे' इत्यनन्तरं पाठभिन्नता दृश्यते—०केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे (क); रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे (ग); केसवाणिज्जे रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे विसवाणिज्जे (घ)।

१०. ०तलाय० (क); तडायसोसणया (ख); तलावसोसणया (घ) ।

११. असति० (क, ग); असइ० (घ) ।

१२. कुक्कुतिए (क) ।

१३. ०भोगाइरित्ते (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. तयाणंतरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. मणदुप्पणिहाणे २. वइदुप्पणिहाणे[1] ३. कायदुप्पणिहाणे ४. सामाइयस्स सतिअकरणया ५. सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ॥

४१. तयाणंतरं च णं देसावगासियस्स[2] समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. आणवणप्पओगे २. पेस[सा ?]णवणप्पओगे[3] ३. सद्दाणुवाए ४. रूवाणुवाए ५. बहियापोग्गलपक्खेवे[4] ॥

४२. तयाणंतरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासंथारे[5] २. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे ३. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी ४. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी ५. पोसहोववासस्स[6] सम्मं[7] अणणुपालणया ॥

४३. तयाणंतरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. सचित्तनिक्खेवणया[8] २. सचित्तपिहणया[9] ३. कालातिक्कमे[10] ४. परववदेसे[11] ५. मच्छरियया[12] ॥

४४. तयाणंतरं च णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाभूसणाराहणाए[13] पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. इहलोगासंसप्पओगे २. परलोगासंसप्पओगे ३. जीवियासंसप्पओगे ४. मरणासंसप्पओगे ५. कामभोगासंसप्पओगे ॥

आणंद-अभिग्गह-पदं

४५. तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं

१. वय° (घ)।
२. °कासियस्स (ग)।
३. क, ख, घ, आदर्शेषु 'पेसवण' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'पेसवण' शब्दस्यार्थो दुरधिगमोऽस्ति। प्रेषणस्यार्थः 'पेसण' शब्देनापि सूचितो भवेत्। 'ग' आदर्शे 'पेसणवण' इति पाठो विद्यते। वृत्त्यनुसारेण अत्रापि आनयनस्यार्थोऽस्ति, यथा—"बलाद् विनियोज्यः प्रेष्यस्तस्य प्रयोगो यथाऽभिगृहीतप्रविचारदेशव्यतिक्रमभयात् त्वयाऽवश्यमेव तत्र गत्वा मम गवाद्यानेयम्" (वृ) तेनात्र 'पेसणवण' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति।
४. °पोग्गलक्खेवे (क)।
५. °संथारए (ग)।
६. पोसहस्स (ग)।
७. वृत्तौ 'सम्मं' शब्दो न व्याख्यातो दृश्यते।
८. °निक्खिवणयाए (क)।
९. °पिहणयाए (क); °पेहणया (ख, घ)।
१०. कालातिकम्मदाणे (ख)।
११. परओवदेसे (ख)।
१२. मच्छरया (ख)।
१३. °राहणयाते (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--नो खलु मे भंते! कप्पइ अज्जप्पभिइं[1] अण्णउत्थिए[2] वा अण्णउत्थिय-देवयाणि वा अण्ण-उत्थिय-परिग्गहियाणि वा अरहंतचेइयाइं[3] वंदित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकतारेणं[4]।

कप्पइ मे समणे निग्गंथे 'फासु-एसणिज्जेणं'[5] असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए--त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे, [जेणेव सए गिहे जेणेव सिवणंदा भारिया[6]?] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवणंदं[7] भारियं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिए[8]! मए[9] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[10]। तं गच्छाहि[11] णं तुमं देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदाहि[12] °णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि॥

सिवणंदाए वंदणट्ठ-गमण-पदं

४६. तए णं सा सिवणंदा भारिया आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[13]-

---

१. अज्जप्पभिईए (ख); अज्जपभिई (घ)।
२. °उत्थिया (ग, घ)।
३. चेइयाइं (क, ख, ग); कोष्ठकसंकेतितासु तिसृष्वपि प्रतिषु 'अरहंतचेइयाइं' पाठस्य स्थाने केवलं 'चेइयाइं' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ 'अरहंत' शब्दो व्याख्यातोऽस्ति।
४. वित्ती° (क, ग)।
५. फासुतेसणिज्जेणं (क); फासुएणं एसणिज्जेणं (ख)।
६. सप्तमाध्ययनानुसारेण असौ पाठः उपयुक्तः प्रतिभाति।
७. सिवनंदा (क), सिवानंद (घ)।
८. °प्पिया (घ)।
९. मते (ग)।
१०. अभिरुतिते (ग)।
११. गच्छ (क, ख, घ); गच्छह (ग)।
१२. सं० पा०--वंदाहि जाव पज्जुवासाहि।
१३. सं० पा०--हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २त्ता एवं वयासी--खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ। प्रस्तुतसंक्षिप्तपाठस्य सूचकचिन्हं नोपलभ्यते। अस्य पूर्तिः औपपातिकस्य (पृ०८०). प्रस्तुतसूत्रवर्तिसप्तमाध्ययनस्य (७।३३) तथा भगवत्याः (९।१४१-१४५) आधारेण कृतास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ॥

४७. तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-निम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

४८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव[1] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

४९. तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासइ ॥

५०. 'तए णं'[2] समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य[3] महइमहालियाए[4] परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ[6] ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

५१. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[7]-•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा० १।४७ ।
२. ततो (क, ख) ।
३. × (क) ।
४. महति° (क) ।
५. ओ० सू० ७१-७७ ।
६. कहेइ (क, ख, ग, घ) ।
७. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

५२. तए णं सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं° गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं[1] पाउब्भूया, तामेव दिसं[2] पडिगया॥

गोयमपुच्छा-पदं

५३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—पहू णं भंते ! आणंदे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे[3] °भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए[4] ?

नो इणट्ठे[5] समट्ठे।

गोयमा ! आणंदे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं[6] पाउणिहिति[7], पाउणित्ता[8] °एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि

---

१. दिसि (ख, घ)।
२. दिसि (क, ख, घ)।
३. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइत्तए।
४. पव्वतित्तते (ग)।
५. तिणट्ठे (क, ग)।
६. °परियायं (घ)।
७. पाहुणीहिति (क)।
८. सं० पा०—पाउणित्ता जाव सोहम्मे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता[1]। तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता[2] [भविस्सई ?]॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५४. तए णं समणे भगवं महावीरे 'अण्णदा कदाइ'[3] °वाणियगामाओ नयराओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ॥

आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५. तए णं से आणंदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[4] °उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देव-गणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभे-माणे विहरइ॥

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया[5]—°अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे

---

१. अतोग्रवर्ती 'पण्णत्ता' पर्यन्तः पाठः अत्र अनावश्यकः प्रतीयते, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोस्ति। किन्तु सर्वासु प्रतिषु कथमपि समागतोसौ लभ्यते।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहिति' इति भविष्यत्-कालीनं क्रियापदं युज्यते।

३. सं० पा० - अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ। °कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख); अन्नया कयाइं (घ)।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडि-लाभेमाणे।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर-परघरदार-प्पवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं

५७. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं[1] 'सील-व्वय-गुण'[2]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा[3] वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर[4]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे°, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स[5] •मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए°, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं[6] धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं[7] कल्लं[8] •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा° जलंते विपुलं[9] असण-पाण-खाइम-साइमं[10] •उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ° जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता, तं मित्त[11]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं° जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता,

---

१. °वतेहिं (ग)।
२. सीलगुणव्वय (क)।
३. अंतरे (क, ग)।
४. सं० पा०—राईसर जाव सयस्स।
५. सं० पा०—कुडुंबस्स जाव आधारे तं।
६. अंतितं (ग)।
७. मम (घ)।
८. सं० पा०—कल्लं जाव जलंते।
९. विउलं (ख)।
१०. सं० पा०—साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं।
११. सं० पा०—मित्त जाव जेट्ठपुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'कोल्लाए सण्णिवेसे'[1] नायकुलंसि[2] पोसहसालं पडिलेहित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं[3] •पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए, तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए णं आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए, तं मित्त[5]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! अहं वाणियगामे नयरे बहूणं[6] •जाव[7] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म-पण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं° विहरित्तए। तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुंबस्स मेढिं पमाणं आहारं आलंबणं चक्खुं ठावेत्ता[9], •तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं° विहरित्तए॥

५८. तए णं [से ?] जेट्ठपुत्ते आणंदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति॥

५९. तए णं से आणंदे समणोवासए तस्सेव मित्त[10]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे[11] ठावेति, ठावेत्ता एवं वयासी—मा णं

---

१. कोल्लागसण्णि° (ग)।
२. नातकुलंसि (ग)।
३. सं० पा०—कल्लं विउलं असणं। कल्लं विउलं तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए (क, ख)।
४. सं० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा°।
५. सं० पा०—तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ।
६. सं० पा०—बहूणं राईसर जहा चिंतियं जाव विहरित्तए।
७,८. उवा० १।१३।
९. सं० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्तए।
१०. सं० पा०- मित्त जाव पुरओ।
११. कुटुंबे (ग); कुडंबे (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाणुप्पिया! तुब्भे अज्जप्पभिइं केइ ममं बहूसु कज्जेसु[1] य •कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य° आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, ममं अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेउ वा उवक्करेउ वा ॥

६०. तए णं से आणंदे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं[2] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव नायकुले, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए[4] •बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्त-सत्थमुसले एगे अबीए° दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

आणंदस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

६१. तए णं से आणंदे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

६२. [तए णं से आणंदे समणोवासए[5]?] पढमं उवासगपडिमं[6] अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

६३. तए णं से आणंदे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं[7] •उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ° आराहेइ ॥

६४. तए णं से आणंदे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के[8] •लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडिया-भूए° किसे धमणिसंतए जाए ॥

आणंदस्स अणसण-पदं

६५. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता[9]•वरत्तकाल-

---

१. सं० पा०—कज्जेसु य आपुच्छउ वा ।

२. मज्झं मज्झं (क) ।

३. द्रूहति (क) ।

४. सं० पा०—पोसहिए° ।

५. भगवती (२।५६) सूत्रानुसारेण कोष्ठकान्तर्गतपाठक्रमः संभाव्यते ।

६. उपासकप्रतिमानां विवरणं ज्ञातुं द्रष्टव्या दशाश्रुतस्कन्धस्य सप्तमीदशा ।

७. सं० पा०—एक्कारसमं जाव आराहेइ ।

८. सं० पा०—सुक्के जाव किसे ।

९. सं० पा०—पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयंसि° धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं[1] •एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धम्मणिसंतए जाए। तं अत्थि ता[2] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव 'य मे'[3] धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे[4] सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय[6]•संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए° कालं अणवकंखमाणे विहरइ॥

आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

६६. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं[7] परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे[8] पंचजोयणसयाइं[9] खेत्तं जाणइ पासइ। [10]•दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणइ पासइ। पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणइ पासइ°। उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ। उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ। अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुतं[11] नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ॥

गोयमस्स आगमण-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए॥

६८. परिसा निग्गया जाव[12] पडिगया॥

---

१. सं० पा०—इमेणं जाव धम्मणिसंतए।
२. जा (ग)।
३. सयमेव (क)।
४. णो (क)।
५. उवा० १।५७।
६. सं० पा०—मारणंतिय जाव कालं।
७. सुहेणं (क); सोभणेणं (ग)।
८. °समुद्दे ण (क)।
९. °सतियं (क, ख); °सइयं (ग)।
१०. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं च।
११. लोलुयं अच्चुतं (ख)।
१२. ओ० सू० ५२,७८-८०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे[1] अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्ते णं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसह-नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

७०. तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बिइयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं, पडिलेहेइ पडिलेहेत्ता भाय-णाइं[2] पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी---इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए [समाणे ?] छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीच-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।।

७१. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं[3] सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ।।

७२. तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ । बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ— एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम[4] °मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिए, भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं° अणवकंखमाणे विहरइ ।।

---

१. जेट्ठे जहा पण्णत्तीए तहा भिक्खायरियाए जाव अडमाणे (क, ग) ।
२. भायणवत्थाइं (क्व) ।
३. इरिय (क्व) ।
४. सं० पा०---अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३. तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं[1] सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे[2] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए'[3], तेणेव उवागच्छइ ।।

७४. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[4]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं[5] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे (सु ?) अभिवंदित्तए । 'तुब्भे णं भंते ! इच्छाक्कारेणं[6] अणभिओएणं[7] इओ चेव एह, जेणं[8] देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ।।

७५. तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ।।

आणंद-गोयम-संवाद-पदं

७६. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हंता अत्थि ।

जइ णं भंते ! गिहिणो[9] •गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे° समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे[10] समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं[11] •खेत्तं जाणामि पासामि । दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे णं लवण-समुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि ।

---

१. एवं (ख) ।

२. अतमेयारूवे (क); अय इमेयारूवे (ख) ।

३. जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क, ख, ग, घ); महाशतकाध्ययने—'जेणेव महासयगस्स समणोवासगस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए' अयं क्रमो विद्यते । अत्राप्यसौ क्रमो युज्यते ।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

५. सं० पा०—उरालेणं जाव धमणिसंतए ।

६. इच्छाकारेणं (घ) ।

७. अभिओगेणं (क,ख) ।

८. जा णं (क,ख,ग); जहा णं (घ) ।

९. सं० पा० —गिहिणो जाव समुप्पज्जइ ।

१०. ओहिण्णाणे (ग) ।

११. सं० पा०—पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए° लोलुयच्चुतं[1] नरयं जाणामि पासामि ॥

७७. तए णं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं वयासी—अत्थि णं आणंदा ! गिहिणो[2] °गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे° समुप्पज्जइ। नो चेव णं एमहालए। तं णं तुमं आणंदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[3] °पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं° तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

७८. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जिणवयणे संताणं[4] तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ[5] °निंदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणयाए अब्भुट्ठिज्जइ पडिक्कमिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जिज्जइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

जइ णं भंते ! जिणवयणे संताणं[6] °तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं° भावाणं नो आलोइज्जइ[7] °नो पडिक्कमिज्जइ नो निंदिज्जइ नो गरिहिज्जइ नो विउट्टिज्जइ नो विसोहिज्जइ अकरणयाए नो अब्भुट्ठिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं° तवोकम्मं[8] नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह[9] °पडिक्कमेह निंदेह गरिहेह विउट्टेह विसोहेह अकरणाए अब्भुट्ठेह अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेह[10] ॥

७९. तए णं से भगवं गोयमे आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे[11] आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे[12], तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता

---

१. लोलुयं अच्चुतं (ख)।
२. सं० पा०—गिहिणो जाव समुप्पज्जइ।
३. सं० पा०—आलोएहि जाव तवोकम्मं। अत्र स्थानांगे प्रस्तुतवृत्तौ च किञ्चित् पाठभेदो विद्यते—पायच्छित्तं तवोकम्मं (स्थानांग ३।३३८) तवोकम्मं पायच्छित्तं (वृत्ति अध्ययन ३) प्रतिषु 'आलोएहि जाव तवोकम्मं' इति पाठसंक्षेपो लभ्यते, तेन स्थानांगानुसारी पाठ एव मूले स्वीकृतः।
४. सच्चाणं (क), संभासे (ख)।
५. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ।
६. सं० पा०—संताणं जाव भावाणं; सच्चाणं (ग); संभासे (ख)।
७. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं।
८. तवे° (क)।
९. सं० पा०—आलोएह जाव पडिवज्जेह।
१०. पडिवज्जह (क,ख,घ)।
११. वितिगिंछ° (क); वितिगिच्छा° (ख,घ)।
१२. महावीरे जाव भत्तपाणं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए[1] •समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि। बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ।

तए णं मम बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि— एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि।

तए णं से आणंदे समणोवासए ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे [सु ?] अभिवंदित्तए। तुब्भे णं भंते ! इच्छक्कारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि।

तए णं अहं जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि। तए णं से आणंदे समणोवासए ममं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हंता अत्थि।

जइ णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयण-सयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि। उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि। अहे जाव

---

१. सं० पा०—अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणामि पासामि।

तए णं अहं आणंदं समणोवासयं एवं वइत्था—अत्थि णं आणंदा! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ। नो चेव णं एमहालए। तं णं तुमं आणंदा! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव[१] अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि।

तए णं से आणंदे ममं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव[२] अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जइ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

जइ णं भंते! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं नो आलोइज्जइ जाव[३] अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव[४] अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेह॰॥

८०. तए णं अहं आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए। 'तं णं'[५] भंते! किं आणंदेणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं[६] •पडिक्कमेयव्वं निंदेयव्वं गरिहेयव्वं विउट्टेयव्वं विसोहेयव्वं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं॰ पडिवज्जेयव्वं? उदाहु मए?

भगवओ उत्तर-पदं

८१. गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—गोयमा! तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि[७] जाव[८] •अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं॰ पडिवज्जाहि, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि॥

गोयमस्स खामणा-पदं

८२. तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[९] •पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

---

१. उवा॰ १।७७।

२,३,४. उवा॰ १।७८।

५. तए णं (ख); ते णं (घ)।

६. सं॰ पा॰—आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं।

७. सं॰ पा॰—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।

८. उवा॰ १।७७।

९. सं॰ पा॰—आलोएइ जाव पडिवज्जइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अब्भुट्ठइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

८३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ बहिया जणवयविहारं[1] विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए णं से आणंदे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं[2] झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं[3] अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स[4] महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं 'अरुणाभे विमाणे'[5] देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणंदस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८५. आणंदे[6] णं भंते! देवे ताओ[7] देवलोगाओ[8] आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६. [9]•एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. जणवतं विहारं (घ)।
२. अप्पाणं (ग)।
३. भत्तांति (क, ग)।
४. °वडिंसगस्स (घ)।
५. अरुणे विमाणे (क); अरुणेहिं विमाणेहिं (ख)।
६. तत्थ णं आणंदे (क)।
७. ततो (ख)।
८. देवलोगलोगाओ (क)।
९. सं० पा—निक्खेवो पढमस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

कामदेवे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स[2] अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

कामदेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी । पुण्णभद्दे चेइए । जियसत्तू राया ।।

३. [3]•तत्थ णं चंपाए नयरीए कामदेवे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ[5], छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।।

५. से णं कामदेवे गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।।

---

१. ना० १।१।७ ।

२. वग्गस्स (क) ।

३. सं० पा०—कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढि-पउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

४. उवा० १।११ ।

५. वुड्ढि० (ख,घ) ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नामं भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ° ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७. [2]•तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[3] जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८. परिसा निग्गया ।।

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ।।

१०. तए णं से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडि-रूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"
तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।।

११. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ ।।

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ।।

---

१. उवा० १।१४ ।
२. सं० पा०—समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं ।
३. ओ० सू० १६,२२ ।
४. ओ० सू० ५३-६९ ।
५. ओ० सू० ७१-७७ ।

कामदेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेहि ।।

१४. तए णं से कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावयधम्मं पडिवज्जइ ।।

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाए नयरीए पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

कामदेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कामदेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ।।

भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा भद्दा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

२. उवा० १।५५

३. उवा० १।५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथार-एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।।

कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं चंपाए नयरीए बहूणं जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[3] ।।

१९. तए णं से कामदेवे समणोवासए॰ जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता[4] •सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए॰ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।।

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छदिट्ठी[5] अंतियं पाउब्भूए ।।

२१. तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ । तस्स णं दिव्वस्स[6] पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सीसं से गोकिलंज-संठाण-संठियं[7], सालि-

---

१,२. उवा॰ १।१३ ।

३. पू॰—उवा॰ १।५७-५९ ।

४. सं॰ पा॰—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स ।

५. मिच्छा॰ (क,घ) ।

६. देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणांतरमुपलभ्यते—'विगयकप्पयनिभं', क्वचित्तु, 'वियडकोप्पर-निभं' (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएणं[1] दिप्पमाणा, 'उट्टिया-कभल्ल-संठाण-संठियं'[2] निडालं, मुगुंसपुच्छं व तस्स भुमकाओ[3] फुग्गफुग्गाओ[4] विगय-बीभत्स[5]-दंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगय-बीभत्स[6]-दंसणाइं, कण्णा जह[7] सुप्प-कत्तरं चेव विगय-वीभत्स[8]-दंसणिज्जा, उरब्भपुडसंनिभा[9] से नासा, झुसिरा जमल-चुल्ली-संठाण-संठिया दो वि तस्स नासापुडया[10], 'घोडयपुच्छं[11] व तस्स मंसूइं कविल-कविलाइं विगय-बीभत्स[12]-दंसणाइं'[13], 'उट्ठा उट्टस्स चेव लंबा'[14], फालसरिसा से दंता, जिब्भा जह सुप्प-कत्तरं चेव 'विगय-बीभत्स-दंसणिज्जा'[15], हल-कुद्दाल[16]-संठिया से हणुया, गल्ल-कडिल्लं व तस्स खड्डं[17] फुट्टं 'कविलं फरुसं महल्लं'[18], मुइंगाकारोवमे से खंधे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठिया-संठाण-संठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाण-संठाण-संठिया दो वि तस्स अग्गहत्था, निसालोढ-संठाण-संठियाओ हत्थेसु अंगुलीओ, सिप्पि-पुडग-संठिया से नखा[19], ण्हाविय-पसेवओ[20] व्व उरंसि[21] लंबंति दो वि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, 'पाण-कलंद'[22]-सरिसा से नाही[23], सिक्कग-संठाण-संठिए से नेत्ते, किण्णपुड-संठाण-संठिया दो वि तस्स वसणा, जमल-कोट्ठिया-

---

१. कविला तेएण (क,ग,घ)।
२. महल्लउट्टिया० (क,ख,ग); महल्लउट्टिया-कभल्लसरिसोवमं (वृपा)।
३. भुमगाओ (ख); भुम्मकाओ (घ)।
४. फग्गुफुग्गाओ (क); जडिलजडिलाओ, जडिल कुडिलाओ (वृपा)।
५. बीभच्छ (ख,घ)।
६. बीभच्छ (ख,घ)।
७. जहा (ख)।
८. बीभच्छ (ख,घ)।
९. हुरप्पपुडसंठाणसंठिया (वृपा)।
१०. वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, वाचनान्तरे—महल्लकुब्ब [कुच्च] संठिया दो वि से कवोला।
११. ०पुंछं (ख)।
१२. बीभच्छ (ख,घ)।
१३. घोडयपुच्छं व तस्स कविलफरुसाओ उड्ढलोमाओ दाढियाओ (वृपा)।
१४. उट्ठा से घोडगस्स जह दोवि विलंबमाणा (वृपा)।
१५. वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, पाठान्तरे—'हिंगुलयधाउकंदरबिलं व तस्स वयणं'।
१६. कुडा (क); कुडाल (ख); कूडा (ग); कुद्दाल (घ)।
१७. खंडं (क,ख)।
१८. कविलफरुसं महल्लं (क,ग); कविलफरिस-महल्लं (घ)।
१९. नहा (ख); नक्खा (ग,घ); वाचनान्तरे तु इदमपरमधीयते—अडियालसंठिओ उरो तस्स रोमगुविलो (वृ)।
२०. पसेवउ (क)।
२१. उरंसि (ख,घ)।
२२. पाणालंद (क,ग)।
२३. नाभी (क,घ); वाचनान्तरेऽधीतं—भग्गकडी विगयवंकपिट्ठी असरिसा दो वि तस्स फिसगा (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठाण-संठिया दो वि तस्स ऊरू, 'अज्जुण-गुट्ठं'[1] व तस्स जाणूइं कुडिल-कुडि-लाइं विगय-बीभत्स-दंसणाइं, जंघाओ कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ, अहरी-संठाण-संठिया दो वि तस्स पाया, अहरी-लोढ-संठाण-सठियाओ पाएसु अंगु-लीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नखा[2] ।।

२२. लडह-मडह-जाणुए[3], विगय-भग्ग-भुग्ग-भुमए[4], अवदालिय-वयण-विवर-निल्लालियग्गजीहे[5], सरड-कयमालियाए 'उंदुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधे, नउल[6]-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे'[7], अप्फोडंते, अभिगज्जंते, भीम-मुक्कट्ट-हासे[8], 'नाणाविह-पंचवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए'[9] एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते[10] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी— हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया[11] ! दुरंत[12]-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्द-सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं[13] वयाइं वेरम-णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं[14] °वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं° पोसहोववासाइं न छड्डेसि[15] न भंजेसि[16], 'तो तं'[17] अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल[18]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण° असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया[19] ! अट्ट-दुहट्ट-

१. अज्जुणगुट्ठं (क) ।
२. नक्खा (ग,घ) ।
३. जण्णुए (क) ।
४. इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरे तु अभिधीयते— मसिमूसगमहिसकालए भरिय-मेहवन्ने लंबोट्ठे निग्गयदंते (वृ) ।
५. निद्दालिय अग्गजीहे (ख) ।
६. णेउल (क) ।
७. पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूभ-लए विच्छुयकयवेयच्छे सप्पकयजण्णोवईए अभिन्नमुहनयणनखवरवग्घचित्तकत्तिनियंसणे (वृ) ।
८. भीममुक्कअट्टट्टहासे (ख,घ) ।
९. × (क) ।
१०. आसुरुते (क) ।
११. °पत्थया (क) ।
१२. दुरंत ४ जाव परिवज्जिया (क,ग) ।
१३. जं सीलाइं (ख) ।
१४. सं० पा०— सीलाइं जाव पोसहोववासाइं ।
१५. छड्डुसि (ख); छंडेसि (घ) ।
१६. भंजसि (क) ।
१७. तो ते (क,ग,घ); तो (ख) ।
१८. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा ।
१९. × (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसट्टे अकाले चेव जीवियाग्रो ववरोविज्जसि ॥

२३. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं[1] पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२४. तए णं से दिव्वे[2] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[3] •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं॰ धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं[5] •वयाइं वेरमणाइं, पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव॰ जीवियाग्रो ववरोविज्जसि ॥

२५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

२६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं[8] भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल[9]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण॰ असिणा खंडाखंडिं करेइ ॥

२७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं[10] •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं॰ दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ[11] •खमइ तितिक्खइ॰ अहियासेइ ॥

कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पदं

२८. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[12] •अतत्थं अणुव्विग्ग अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं॰ विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे[13] नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाग्रो पावयणाग्रो चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-

---

१. देवेणं (ख,घ)।
२. देवेणं (ख,घ)।
३. सं॰ पा॰—अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं।
४. उवा॰ २।२२।
५. सं॰ पा॰—सीलाइं वयाइं न छड्डेसि तो जीवियाओ।
६. उवा॰ २।२३।
७. उवा॰ २।२४।
८. तिउडियं (क)।
९. सं॰ पा॰—नीलुप्पल जाव असिणा।
१०. सं॰ पा॰—उज्जलं जाव दुरहियासं।
११. सं॰ पा॰—सहइ जाव अहियासेइ।
१२. सं॰ पा॰—अभीयं जाव विहरमाणं।
१३. जाव (ग,घ,) अशुद्धं प्रतिभाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ[1], विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ—सत्तंगपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजातं पुरतो[2] उदग्गं पिट्ठतो वराहं[3] अयाकुच्छि अलंबकुच्छिं[4] पलंब-लंबोदराधरकरं अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-विमल-धवलदंतं कंचणकोसी-पविट्ठदंतं आणामिय[5]-चाव-ललिय-संवेल्लियग्ग-सोंडं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसतिनखं[6] अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलुगुलेंतं[7] मण-पवण-जइणवेगं—दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया[8] ! •अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो[9] तं 'अहं अज्ज'[10] सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

२९. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए[11] •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ।।

३०. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[12] •अतत्थं अणुव्विग्गं

---

१. विप्पहयंति (क) सर्वत्र; विप्पयहती (ग) सर्वत्र ।
२. पुरओ (क) ।
३. वसहं (ग) ।
४. × (क,ग); अइया (अजिया) कुच्छी (ना० १।१।१५६) ।
५. अणोमिय (क) ।
६. °नक्खं (ग) ।
७. गुलगुलेंतं (घ)
८. सं० पा०—समणोवासया तहेव भणइ जाव न भंजेसि ।
९. × (क,ख,ग,घ) ।
१०. अज्ज अहं (क,ख,ग,घ) ।
११. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।
१२. सं० पा०—अभीयं जाव विहरमाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं° विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा[1] ! °समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हेत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छेत्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३१. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3]° विहरइ ॥

३२. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं सोंडाए गेण्हेति[5], गेण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ[6], उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ॥

३३. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं[7] °विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्ग-पदं

३४. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ[8] °कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते° सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ—उग्गविसं[9] चंडविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमलजुयल-चंचलचलंतजीहं[10] धरणीयलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्कस-वियड-

---

१. सं० पा०—कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. गिण्हइ (ख,घ) ।
६. उव्वहइ (क) ।
७. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेइ ।
८. सं० पा०—संचाएइ जाव सणियं ।
९. उग्गविसं दिट्ठिविसं जाव सप्परूवं (क,ग); उग्गविसं दिट्ठिविसं (घ) ।
१०. चंचलजीहं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियदिव्वपचंडरोसं-दिव्वं सप्परूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया[1] ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया। सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि[2], तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं[3] दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए[4] •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ॥

३६. [5]•तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7]° विहरइ ॥

---

१. सं० पा० – समणोवासया जाव न भंजेसि।
२. भंजसि (क,ग)।
३. विसमपरिगताइं (क)।
४. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ।
५. सं० पा०—सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ।
६. उवा० २।२२।
७. उवा० २।२३।

३८. तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवस्स सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ ॥

३९. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं[2] •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

देवरूव-विउव्वण-पदं

४०. तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[3] •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं° पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ - हार-विराइय-वच्छं[4] •कडग-तुडिय-थंभियभुयं अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंड-कण्णपीढ-धारिं विचित्तहत्थाभरणं विचित्तमाला-मउलि-मउडं कल्लाणग-पवरवत्थपरिहियं कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणं भासुरबोंदिं पलंबवणमालधरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए° दसदिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं[5] 'दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं—दिव्वं देवरूवं विउव्वित्ता'[6] कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि[7] •णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कय-लक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया !° सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

---

१. उवा० २।२४ ।
२. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेइ ।
३. सं० पा०—अभीयं जाव पासइ ।
४. सं० पा०—हारविराइयवच्छं जाव दस-दिसाओ ।
५. पासति (ख) ।
६. × (ख) ।
७. संपुण्णे (क,ग) । सं० पा०—पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया[1] •वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीस-विमाण-सयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबर-वत्थधरे आलइय-मालमउडे नव-हेम-चारु-चित्त-चंचल-कुंडल-विलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सोहम्माए॰ सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं[2], •तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं॰, अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[3] •उम्मुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। नो खलु से सक्के[4] केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा'[5] जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा। तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इहं हव्वमागए। तं अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए।'[6] तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी[7] •जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते॰ अभिसमण्णागए। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[8] णं देवाणुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पंजलिउडे[9] एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए॥

कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ॥

---

१. देवराया सतक्कतु जाव सक्कंसि (क); देवराया सतक्कत्तं जाव सक्कंसि (ग); सं० पा०—देवराया जाव सक्कंसि।

२. सं० पा०—साहस्सीणं जाव अण्णेसिं।

३. सं० पा०—बंभचारी जाव दब्भसंथारोवगए।

४. सक्का (क, ख, ग, घ)।

५. दाणवेण वा जा गंधव्वेण वा (क); दाणवेण वा गंधव्वेण वा (ग)।

६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (ख)।

७. सं० पा०—इड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

८. °मरुहंती (क)।

९. पंजलियडे (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे[1] •जाव[2] जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

४३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे[3] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ।" तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता[4] ?] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं[5] पवर परिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चंपं[6] नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए[7], •जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासइ ।।

---

१. सं० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

२. ओ० सू० १६.२२ ।

३. सं० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

४ 'संपेहेत्ता' इति पाठस्याग्रे कोष्ठकान्तर्गतपाठो युज्यते । १६ सूत्रे—'सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, इति पाठोस्ति, तेन अत्रापि 'पोसहसालाओ पडिणिक्खमित्ता' एष पाठः आवश्यकोस्ति । भगवती (१२।१५) सूत्रेपि इत्थमेव पाठयोजना विद्यते—पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ ।

५. सुद्धप्पा अप्प मणुस्सवग्गुरा (क); सुद्धप्पवेसाइं अप्पमहग्घा मणुस्सवग्गुरा (ख, घ); सुद्धपावेसाइं वत्थाइं अप्पमहग्घाइं जाव अप्पमणुस्सवग्गुरा (ग); प्रतिषु ऊर्ध्वमुट्टंकितः पाठो विद्यते, किन्तु नासौ प्रसंगानुसारी प्रतिभाति । कामदेवः संप्रति पौषधिको वर्तते । अतएव 'अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे' नासौ पाठः पोषधावस्थायां संगच्छते । शंखश्रावकेणापि पोषधावस्थायां भगवतो दर्शनं कृतम् । तत्र 'सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए', (भगवती १२।१५) एतावान् एव पाठो विद्यते । भगवतीवृत्तावपि एतावतः, पाठस्यैव व्याख्या समुपलभ्यते । प्रस्तुताध्ययने (सू० १६) 'उम्मुक्कमणिसुवण्णे' एव पाठोस्ति, तदा आभरणालंकरणं कथं प्रासंगिकं स्यात् ? असावत्र प्रवाहरूपेण आयातः इति संभाव्यते ।

६. चंपा (ख) ।

७. सं० पा०—चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य[1] •महइमहालियाए परिसाए जाव[2] धम्मं परिकहेइ° ॥

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं

४५. कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी--से नूणं कामदेवा ! तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए। तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं[3] विउव्वइ, विउव्वित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल[4]-•गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं गहाय तुमं एवं वयासी हंभो ! कामदेवा[5] ! •समणोवासया ! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तुमं तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरसि।

[8]•तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव[9] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[10] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[11] विहरसि।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव[12] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु तुमं

---

१. सं० पा०--तीसे य जाव धम्म कहा सम्मत्ता।
२. ओ० सू० ७१-७७।
३. पिसातरूवं (ग)।
४. सं० पा०--नीलुप्पल जाव असिं।
५. सं० पा०--कामदेवा जाव जीवियाओ।
६. उवा० २।२२।
७. उवा० २।२३।
८. सं० पा०--एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ।
९. उवा० २।२४।
१०. उवा० २।२२।
११. उवा० २।२३।
१२. उवा० २।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडिं करेइ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव[1] वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ, तुमं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्प-जहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—हंभो ! काम-देवा ! समणोवासया ! जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[4] विहरसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव[5] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, निणित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणु-प्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुमं सोंडाए गेण्हति, गेण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणि-तलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ।

---

१. उवा० २।२७।
२. उवा० २।२४।
३. उवा० २।२२।
४. उवा० २।२३।
५. उवा० २।२४।
६. उवा० २।२२।
७. उवा० २।२३।
८. उवा० २।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव[1] वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमं, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—हंभो! कामदेवा! समणोवासया! जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[4] विहरसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव[5] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी—हंभो! कामदेवा! समणोवासया! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुब्भं सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढेत्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव[9] वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव[10] पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ

---

१. उवा० २।२७।
२. उवा० २।२४।
३. उवा० २।२२।
४. उवा० २।२३।
५. उवा० २।२४।
६. उवा० २।२२।
७. उवा० २।२३।
८. उवा० २।२४।
९. उवा० २।२७।
१०. उवा० २।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव[1] एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ एवं खलु देवा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथा-रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। नो खलु से सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावय-णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा।

तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इहं हव्वमागए। तं अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। तं दिट्ठा णं देवाणुप्पि-याणं इड्ढी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणु-प्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए°। से नूणं कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि॥

भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं

४६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमं-तेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसंता दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहंति[2] °खमंति तितिक्खंति°

---

१. उवा० २।४०।

२. सं० पा०—सहंति जाव अहियासेंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहियासेंति, सक्का पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए[1] •खमित्तए तितिक्खित्तए॰ अहियासित्तए ।।

४७. ततो ते बहवे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ।।

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ[2]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए॰ समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ, अट्ठमादियइ, समणं भग ं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।।

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए[3] णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ[4] ।।

५१. •तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।।

५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।।

५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।।

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. सं॰ पा॰—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।
२. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव समण ।
३. तओ (क, ग, घ) ।
४. सं॰ पा॰—विहरइ तएणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—'एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए' एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥°

कामदेवस्स समाहिमरण-पदं

५५. तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं[2] •सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं[3] झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५६. से णं भंते! कामदेवे ताओ[4] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५७. [5]•एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते°॥

---

१. उवा० १।५७।
२. सं० पा०—बहूहिं जाव भावेत्ता।
३. अप्पाणं (क, ख, ग, घ)।
४. तओ चेव (ख)।
५. सं० पा०—निक्खेवो।

तइयं अज्झयण

चुलणीपिता

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?॰

चुलणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी। कोट्ठए[3] चेइए। जियसत्तू राया॥

३. [4]•तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता[5] नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[6] बहुजणस्स अपरिभूए॥

४. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था॥

५. से णं चुलणीपिता गाहावई बहूणं जाव[7] आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३. क्वचित् कोष्ठकं चैत्यमधीतं क्वचिन्महाकामधनमिति (वृ)।

४. सं० पा०—तत्थ णं वाणारसीए चुलणिपिया नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिय॰ अट्ठ पवित्थरप॰। अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था।

५. चुलणिपिता (ग, घ)।

६. उवा० १।११।

७,८. उवा० १।१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स सामा[1] नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[2] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ° ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७. [3]°तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[4] जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८. परिसा निग्गया ।।

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[5] पज्जुवासइ ।।

१०. तए णं से चुलणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहार-चारेणं वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमं-सइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ।।

---

१. सोमा (ख) ।
२. उवा० १।१४ ।
३. सं० पा०—सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदे तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । गोयमपुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए ।
४. ओ० सू० १६, २२ ।
५. ओ० सू० ५२-६६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[1] धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी - सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं —दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[2] सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

---

१. ओ० सू० ७१-७७।

२. पू०—उवा० १।२४-५३।

३. उवा० १।५५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा सामा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[1] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ।।

चुलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए बहूणं जाव[2] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[3] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[4] ।।

१९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता॰ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी[5] •उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए॰ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।।

चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे[6] अंतियं पाउब्भूए ।।

॰जेट्ठपुत्त

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल[7]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं॰

---

१. उवा॰ १।५६ ।

२,३. उवा॰ १।१३ ।

४. पू॰—उवा॰ १।५७-५६ ।

५. सं॰ पा॰—बंभयारी समणस्स ।

६. द्वितीयाध्ययनस्य विंशतितमे सूत्रे अस्याग्रे 'मायी मिच्छद्दिट्ठी' एतद् विशेषणद्वयं विद्यते ।

७. सं॰ पा॰—नीलुप्पल जाव असिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असि गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया[1] ! °अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्ग-पिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न° भंजेसि, तो[2] ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं 'साओ गिहाओ'[3] नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ[4] मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि[5], अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि[6], जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए[7] °अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ॥

२३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं[8] °अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं° विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[9] ! °जाव[10]° जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[11]° विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भंजेसि ।
२. ततो (क); तओ (ख) ।
३. सातो गिहातो (क, ग);सयातो गिहाओ(घ) ।
४. ततो (क) ।
५. दहेमि (ख) ।
६. आसिंचामि (ख, ग) ।
७. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।
८. सं० पा०—अभीयं जाव पासइ ।
९. सं० पा०—समणोवासया ! तं चेव भणइ सो जाव विहरइ ।
१०. उवा० २।२२ ।
११. उवा० २।२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ[2] नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

२६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं[3] •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

°मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, 'तो ते'[6] अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता[7] •तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ ॥

२९. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[9] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी- हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव[10] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य

---

१. उवा० २।२४।

२. यत्र उत्तमपुरुषक्रियाप्रयोगस्तत्र सर्वत्रापि 'साओ गिहाओ' इतिपाठो लभ्यते । यत्र च प्रथमपुरुषक्रियाप्रयोगोस्ति तत्र केवलं 'गिहाओ' पाठो लभ्यते, किन्तु यत्र श्रमणोपासकाः घटितघटनां मनसि चिन्तयन्ति श्रावयन्ति च तत्र 'साओ गिहाओ' पाठो युज्यते ।

३. सं० पा० —उज्जलं जाव अहियासेइ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. ततो ते (क); ततो (ख) ।

७. सं०पा०— घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयसंपि जाव अहियासेइ ।

८. उवा० २।२३ ।

९. उवा० २।२४ ।

१०. उवा० २।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव[3] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

°कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[8] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण

---

१. उवा० २।२३ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२७ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

३६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ।।

३७. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।।

३८. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव[3] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ।।

°भद्दा सत्थवाही

३६. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं[6] °अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, 'तो ते'[7] अहं अज्ज जा इमा[8] माया भद्दा सत्थवाही देवतं 'गुरु-जणणी'[9] 'दुक्कर-दुक्करकारिया'[10] तं[11] साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेणं य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

४०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[12] विहरइ ।।

---

१. उवा० २।२३ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२७ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. सं० पा०—तुमं जाव न भंजेसि ।
७. तओ (ख, ग) ।
८. इमा तव (क्व) ।
९. गुरुजणणी (क); गुरु जणणी (ख, ग) ।
१०. दुक्करकारिया (ग) ।
११. तं ते (क, ख, ग, घ); डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल द्वारा प्रस्तुतसूत्रस्य पाठसंशोधनप्रयुक्तादर्शेषु एकस्मिन् आदर्शे 'ते' पाठो नोपलभ्यते । तदाधारेण अस्माभिरत्र तस्याग्रहणं कृतम् ।
१२. उवा० २।२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया[2] ! •जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया भद्दा सत्थवाही देवतं गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।।

चुलणीपियस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे[4] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति[5], 'जे णं'[6] ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता[7] •तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं° गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, 'जे णं ममं'[8] मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ[9] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य° सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ[10] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ, जा वि य णं इमा[11] ममं माया भद्दा सत्थवाही देवतं 'गुरु-जणणी'[12] दुक्कर-दुक्करकारिया, तं पि य णं इच्छइ[13] साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए—तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए

१. उवा० २।२४ ।
२. सं० पा०—समणोवासया तहेव जाव ववरोविज्जसि ।
३. उवा० २।२२ ।
४. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
५. समातरति (क, ग); समायरइ (ख, घ) ।
६. जेण (ग) ।
७. सं० पा०—घाएत्ता जहा कयं तहा विचिंतेइ जाव गायं ।
८. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।
९. सं० पा०—गिहाओ जाव सोणिएण ।
१०. सं० पा०—गिहाओ तहेव जाव आइंचइ ।
११. इमं (ख) ।
१२. गुरुं जणणीं (क, ख, ग, घ) ।
१३. इच्छेति (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति कट्टु उद्धाविए[1], से वि य आगासे उप्पइए, तेण च[2] खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।।

भद्दाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ[3], उवागच्छित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं पुत्ता ! तुमं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

चुलणीपियस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—एवं खलु अम्मो ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते[4] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल[5]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुर-धारं° असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[6] ! जाव[7] जइ णं तुमं[8] •अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइं-चामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं[9] एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[11] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[12] ! •जाव[13] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव[14] तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

---

१. उट्ठाइए (ख); उट्ठाएइत्ते (घ); डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल संपादिते पुस्तके प्रस्तुतसूत्रे 'उट्ठाइए' इति पाठः स्वीकृतोऽस्ति, लिपिजनितभ्रमकारणेन बहुषु आदर्शेषु मुद्रित-पुस्तकेषु च 'उद्धा' स्थाने 'उट्ठा' एव लभ्यते। अग्रे 'भग्गवए' इति पाठस्य व्याख्यायां वृत्ति-कारेणापि 'उद्धावनात्' इति उल्लिखतमस्ति।
२. य (घ)।
३. उवागते (क)।
४. आसुरुत्ते (ग, घ)।
५. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिं।
६. समणोवासया अपत्थिय-पत्थिया ! ४ (क)।
७. उवा० २।२२।
८. सं० पा०—तुमं जाव ववरोविज्जसि।
९. देवेणं (क, ख, ग, घ); अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र।
१०. उवा० २।२३।
११. उवा० २।२४।
१२. सं० पा०—समणोवासया तहेव जाव गायं आइंचइ।
१३. उवा० २।२२।
१४. उवा० २।२२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ।

तए णं अहं तं उज्जलं[3] •जाव[4] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि° अहियासेमि।

[5]•एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[6] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि° अहियासेमि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो! चुलणीपिया! समणोवासया[9]! जाव[10] •जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवतं गुरु[11]-•जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[12] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[13] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो! चुलणीपिया! समणोवासया! जाव[14] जइ णं तुमं अज्ज[15] •सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न

---

१. उवा० २।२३।
२. उवा० २।२४।
३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेमि।
४. उवा० २।२७।
५. सं० पा०—एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि।
६. उवा० ३।२७-३२।
७. उवा० ३।३३-३८।
८. उवा० २।२४।
९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि।
१०. उवा० २।२२।
११. सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि।
१२. उवा० २।२३।
१३. उवा० २।२४।
१४. उवा० २।२२।
१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ॥

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए[1] •अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं° समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ[2] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ, तुब्भे वि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए। से वि य आगासे उप्पइए मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव[3] •जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव° कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे[4] दिट्ठे। तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। 'तं ण'[5] तुमं पुत्ता! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[6] •पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए अम्माए[7] भद्दाए सत्थवाहीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[8] •पडिक्कमइ

---

१. सं० पा०—अणारिए जाव समाचरति।
२. सं० पा०—गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ।
३. सं० पा०—तव जाव कणीयसं।
४. विद्दरिसणे (ग)।
५. तण्णं (क); तेणं (घ)।
६. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
७. अम्मगाते (ग, घ)।
८. सं० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जइ ।।

चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।।

४८. [1]•तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।।

४९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ° ।।

५०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं[2] ओरालेणं[3] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।।

चुलणीपियस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-किडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

---

१. सं० पा०—पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि ।

२. अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेणं' पाठो विद्यते ।

३. सं० पा०—उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे ।

४. उवा० १।५७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंस-गस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५३. [1]°एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. सं० पा०—निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

सुरादेवे

उक्खेव-पदं

१. [1]जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॰ ?

सुरादेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्ठए[3] चेइए । जियसत्तू राया ॥

३. [4]तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ—अड्ढे जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

५. से णं सुरादेवे गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवो ।
२. ना० १।१।७ ।
३. कामधनम् (वृपा) ।
४. सं० पा०—सुरादेवे गाहावइ अड्ढे । छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं तस्स धन्ना भारिया सामी समोसढे । जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।
५. उवा० १।११ ।
६. उवा० १।१३ ।
७. उवा० १।१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स धन्ना नामं भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[2] जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८. परिसा निग्गया ।।

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[3] पज्जुवासइ ।।

१०. तए णं से सुरादेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेणं वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे,तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलि-उडे पज्जुवासइ ।।

११. तए णं समणे भगवं महावीरे सुरादेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्मं परिकहेइ ।।

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ।।

---

१. उवा० १।१४।

२. ओ० सू० १६, २२।

३. ओ० सू० ५३-६९।

४. ओ० सू० ७१-७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा धन्ना भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

२. उवा० १।५५।

३. उवा० १।५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए बहूणं जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[3] ॥

१९. तए णं सुरादेवे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

सुरादेवस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ॥

°जेट्ठपुत्त

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल[4]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं गहाय[5] सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो! सुरादेवा! समणोवासया! अप्पत्थियपत्थिया[6]! दुरंत-पंत-लक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसिया!

---

१. उवा० १।१३।

२. उवा० १।१३।

३. पू०—उवा० १।५७-५९।

४. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिं।

५. द्वितीयाध्ययनस्य द्वाविंशतितमे सूत्रे निम्न-लिखितः पाठोतिरिक्तो विद्यते—'जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं'।

६. °पत्थिया ४ (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्ग-कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं[1] •वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं 'अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे'[2] अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. [3]•तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अक्खुभियं अच-लियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-वासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ॥

२४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ॥

२५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

---

१. सं० पा०—सीलाइं जाव न भंजेसि ।
२. × (क, ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच सोल्लया । तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया ।
४. उवा० २।२२ ।
५. उवा० २।२३ ।
६. उवा० २।२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

°मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

२९. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव[8] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

३५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ।

३८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव[8] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४।
२. उवा० २।२२।
३. उवा० २।२३।
४. उवा० २।२४।
५. उवा० २।२२।
६. उवा० २।२३।
७. उवा० २।२४।
८. उवा० २।२७।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

°सोलसरोगायंक

३९. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि[3], तो ते अहं अज्ज सरीरंसि[4] जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि, [तं जहा—१. सासे २. कासे[5] ३. °जरे ४. दाहे ५. कुच्छिसूले ६. भगंदरे ७. अरिसए ८. अजीरए ९. दिट्ठिसूले १०. मुद्धसूले ११. अकारिए १२. अच्छिवेयणा १३. कण्णवेयणा १४. कडुए १५. उदरे° १६. कोढे।][6] जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

४०. तए णं से सुरादेवे समणोवासए[7] °तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[8]° विहरइ ।।

४१. [9]°तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[10] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[11] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि जाव[12] जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।।

सुरादेवस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए[13] °अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं° समाचरति, जे णं ममं जेट्ठपुत्तं[14] °साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले[15] करेइ, करेत्ता आदाण-

१. उवा० २।२४।
२. उवा० २।२२।
३. परिच्चयसि (क, ख, ग, घ)।
४. सरीरस्स (क, ख, ग, घ)।
५. सं० पा०—कासे जाव कोढे।
६. असौ कोष्ठकवर्तिपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
७. सं० पा०—समणोवासए जाव विहरइ।
८. उवा० २।२३।
९. सं० पा०—एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव ववरोविज्जसि।
१०. उवा० २।२४।
११. उवा० २।२२।
१२. उवा० ४।३९।
१३. सं० पा०—अणारिए जाव समाचरति।
१४. सं० पा०—जेट्ठपुत्तं जाव कणीयसं जाव आइंचइ।
१५. मंससोल्लया (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य॰ आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि[1] पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

धन्नाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलसद्दं[2] सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—किण्णं[3] देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

सुरादेवस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे[4] •आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि

१. सरीरगंसि (क) ।

२. कोलाहलं (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसद्दं' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु संक्षिप्तलेखने 'कोलाहलं' पाठो जातः इति प्रतीयते ।

३. किण्णं तुमं (ग) ।

४. सं॰ पा॰—पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं ।

५. उवा॰ २।२२ ।

६. उवा॰ २।२३ ।

७. उवा॰ २।२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[1] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेण पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[2] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ । तए णं अहं तं उज्जलं जाव[4] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[5] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयस्सं पुत्तं जाव[6] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[8] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि जाव[9] जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[11] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[12] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि जाव[13] जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तेण पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे

---

१. उवा० २।२२ ।
२. उवा० २।२३ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२७ ।
५. उवा० ४।२७-३२ ।
६. उवा० ४।३३-३८ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२२ ।
९. उवा० ४।३९ ।
१०. उवा० २।२३ ।
११. उवा० २।२४ ।
१२. उवा० २।२२ ।
१३. उवा० ४।३९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा धन्ना भारिया सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ°, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं[1] के वि पुरिसे सरीरंसि[2] जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ, एस णं के वि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ[3], •एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे। तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। तं णं तुमं पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

---

१. यद्यपि 'तुब्भे, तुब्भं' इत्यादिबहुवचनान्ताः प्रयोगा व्याकरणे दृश्यन्ते, तथापि प्रस्तुतागमे एकवचनान्ता अपि प्रयुक्ताः सन्ति। महाशतकाध्ययने २७ सूत्रे 'तुब्भं, तुमं, विहरसि' एते प्रयोगाः एकस्मिन्नेव प्रसङ्गे प्राप्ताः सन्ति।

२. सरीरगंसि (क)।

३. सं० पा०—करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

४८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

४९. तए णं से सुरादेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५०. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

सुरादेवस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से सुरादेवे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए

---

१. उवा० १।५७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकंते विमाणे उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५३. •[1]एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. सं० पा०— निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पचमं अज्झयण

चुल्लसयए

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ° ?

चुल्लसययगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया[3] नामं नयरी । संखवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ।।

३. [4]•तत्थ णं आलभियाए नयरीए चुल्लसयए नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।।

५. से णं चुल्लसयए गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।।

६. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स बहुला नामं भारिया होत्था—अहीण-

---

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. आलंभिया (क, घ) ।

४. सं० पा०—चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं बहुला भारिया ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ °॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. [2]•तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[3] जेणेव आलभिया नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८. परिसा निग्गया ॥

९. कुणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से चुल्लसयए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे– "एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव आलभियाए नयरीए बहिया संखवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहार-चारेणं आलभियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव संखवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-याए परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

---

१. उवा० २।२४।

२. सं० पा०—सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति।

३. ओ० सू० १६, २२।

४. ओ० सू० ५३-६६।

५. ओ० सू० ७१-७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्लसययस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ आलभियाए नयरीए संखवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा बहुला भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

---

१. पू०—१।२४-५३।

२. उवा० १।५५।

३. उवा० १।५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथार-एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं आलभियाए नयरीए बहूणं जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[3] ॥

१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता आलभियं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं° धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं[4] •पाउब्भूए ॥

°जेपुट्ठस्स

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं गहाय एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया[5] ! •अप्पत्थिय-पत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्ख-

---

१. उवा० १।१३।
२. उवा० १।१३।
३. पू०—उवा० १।५७-५९।
४. सं० पा०—अंतियं जाव असिं।
५. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेसि।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

कामया! धम्मकंखिया! पुण्णकंखिया! सग्गकंखिया! मोक्खकंखिया! धम्मपिवासिया! पुण्णपिवासिया! सग्गपिवासिया! मोक्खपिवासिया! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तइ वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि॰ न भंजेसि, तो ते [अहं ?] अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि[1], •नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि॥

२२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ॥

२३. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसययं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो! चुल्लसयगा! समणोवासया! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि॥

२४. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ॥

२५. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ॥

२६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ॥

१. सं० पा०—नीणेमि, एवं जहा चुलणीपियं, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि।

२. उवा० २।२२।

३. उवा० २।२३।

४. उवा० २।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

२९. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी – हंभो ! चुल्लसयया ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं जाव[8] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साम्रो गिहाम्रो नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गम्रो घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाम्रो ववरोविज्जसि ।।

३४. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ।।

३५. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साम्रो गिहाम्रो नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गम्रो घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाम्रो ववरोविज्जसि ।।

३६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ।।

३७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसीमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाम्रो नीणेइ, नीणेत्ता अग्गम्रो घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ ।।

३८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए[8] °तं उज्जलं जाव[9] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ।।

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. सं० पा०—समणोवासए जाव अहियासेइ ।
९. उवा० २।२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°हिरण्णकोडी-विप्पकिरण

३६. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासिया[2] ! •जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग[4]-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि[5], जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

४०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

४१. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि[8] •एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[9] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि °॥

चुल्लसयगस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए[10] •अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता

---

१. उवा० २।२४।
२. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेसि।
३. उवा० २।२२।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
५. विप्पयिरामि (क, ग)।
६. उवा० २।२३।
७. उवा० २।२४।
८. सं० पा०—तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि।
९. उवा० २।२२।
१०. सं० पा०—अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य॰ आइंचइ, जाओ वि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग[1]-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता॰ विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए[2], •से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।।

बहुलाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा बहुला भारिया तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लसयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

चुल्लसयगस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहुलं भारियं एवं वयासी—एवं खलु बहुले ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[4] विहरामि ।

---

१. सं॰ पा॰—सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए ।

२. सं॰ पा॰—उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे ।

३. उवा॰ २।२२ ।

४. उवा॰ २।२३ ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी--हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव[5] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[6] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[9] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्ण-कोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[11] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[12] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२७ ।
६. उवा० ५।२७-३२ ।
७. उवा० ५।३३-३८ ।
८. उवा० २।२४ ।
९. उवा० २।२२ ।
१०. उवा० २।२३ ।
११. उवा० २।२४ ।
१२. उवा० २।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ,करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ,जाओ वि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्ण-कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरित्ताए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्ताए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा बहुला भारिया चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी - नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं के वि पुरिसे तव छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय - चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहुलाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

४८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

४९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

---

१. उवा० १।५७।

चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। •[1]तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। चुल्लसयगस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५३. से णं भंते ! चुल्लसयए ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे° सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४. •[2]एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. सं० पा०—चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। सेसं तहेव जाव सिज्झिहिति।
२. सं० पा०—निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

कुंडकोलिए

उक्खेव-पदं

१. •'जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?०

कुंडकोलियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कंपिल्लपुरे नयरे[3]। सहस्संबवणे उज्जाणे। जियसत्तू राया ॥

३. •[4]तत्थ णं कंपिल्लपुरे नयरे कुंडकोलिए नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

५. से णं कुंडकोलिए गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३. अस्यानन्तरमतिरिक्तपाठः—'पुढविसिलापट्टए चेइए' (ग)।

४. सं० पा०—कुंडकोलिए गाहावई। पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं।

५. उवा० १।११।

६. उवा० १।१३।

७. उवा० १।१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स पूसा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ°॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. •[2]तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[3] जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८. परिसा निग्गया ॥

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से कुंडकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"

तं महप्फलं खलु भो! देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं-महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेणं कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ ॥

---

१. उवा० १।१४।

२. सं० पा०—सामी समोसढे। जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ सा सव्वेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ।

३. ओ० सू० १६, २२।

४. ओ० सू० ५३-६६।

५. ओ० सू० ७१-७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

कुंडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्प-माणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं, भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्संब-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३। २. उवा० १।५५।

जाव[1] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं

१८. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकालसमयंसि[2] जेणेव असोगवणिया, जेणेव[3] पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दगं[4] च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

१९. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ॥

२०. तए णं से देवे नाममुद्दगं[5] च उत्तरिज्जगं[6] च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता 'अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं'[7] पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी -हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया ! सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता[8] सव्वभावा[9], मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा[10] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा अणियता[11] सव्वभावा ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२१. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती[12]—नत्थि उट्ठाणे इ वा[13] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा[14] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° अणियता

---

१. °उवा १।५६ ।
२. पुव्वा° (ख, घ) ।
३. जेणामेव (क) ।
४ नामामुद्दगं (क, ख, ग) ।
५. नाममुद्दं (क, ख, घ); नामामुद्दं (ग) ।
६. उत्तरिज्जं (ख, ग, घ) ।
७. सखिंखिणिं अंतलिक्खपडिवण्णे (क, ख, ग, घ); पाठसंशोधनकरणेनात्र परिवर्तनं जातम् । मूलपाठः २।४० सूत्रानुसारी स्वीकृतः ।
८. नियया (ख, घ) ।
९. सव्वेभावा (ग) ।
१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।
११. अणियता (क, घ); अणियया (ख) ।
१२. °पण्णत्ति (ग) ।
१३. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव नियता ।
१४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव अणियता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा[1] लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं[2] •कम्मेणं बलेणं वीरिएणं॰पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं[3] •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं॰ अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए णं से देवे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा[4] दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं[5] अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[6] ।।

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी--जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे 'इमा एयारूवा'[7] दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं[8] •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं॰ अपुरिसक्कारपरक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[9], जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा[10] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार॰-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा[11] ?
'अह तुब्भे'[12] इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं[13] •कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार॰-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती— नत्थि उट्ठाणे इ वा[14] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा॰ णियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

---

१. किणा (क) ।
२. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं ।
३. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण ।
४. इमेयारूवा (क, ख, ग, घ) ।
५. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ।
६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (ख) ।
७. इमेयारूवा (क, घ); इमे एयारूवा (ग) ।
८. स० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ।
९. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ) ।
१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।
११. 'क' प्रतौ अस्यानन्तरं—'अह ते एवं भवति, तो जं वदसि॰' एवं पाठो विद्यते । 'ग' प्रतौ 'अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ उट्ठाणेण जाव परक्कमेणं लद्धा ३ । तं ते एवं न भवति, तो जं वदसि'॰ ।
१२. अह णं देवाणुप्पिया तुमे (ख, घ) ।
१३. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं ।
१४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव णियता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा[1] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिस-क्कार-परक्कमे इ वा° अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा ॥

देवस्स पडिगमण-पदं

२४. तए णं से देवे कुंडकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए[2] कंखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो संचाएइ कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ[3], ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

२५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

२६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे[4] •समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"

तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

२७. तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स तीसे य महइ-महालियाए परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ° ॥

महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परूवण-पदं

२८. कुंडकोलियाइ ! समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—

---

१. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव अणियता।

२. संकिए जाव कलुससमावण्णे (ग)।

३. ठावेइ (घ)।

४. लद्धट्ठे हट्ठ (क, ख, ग, घ); अत्र 'हट्ठ' शब्दः किमर्थमुल्लिखितः, इति न ज्ञायते। कामदेववर्णने नासौ उपलभ्यते। सं० पा०—लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ। धम्मकहा।

५. ओ० सू० ७१-७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से नूणं कुंडकोलिया ! कल्लं[1] तुब्भं पच्चावरण्हकालसमयंसि[2] असोगवणियाए एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे नाममुद्दगं च[3] •उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं एवं वयासी—हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया ! सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती - नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्व-भावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा ।

तए ण तुमं तं देवं एवं वयासी – जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परकम्मे इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परकम्मेणं ?

तए णं से देवे तुमं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ?

अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा । तए णं से देवे तुमं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

---

१. × (ख) ।
२. पुव्वावरण्ह° (ख, घ) ।
३. सं० पा०—नामुद्दगं च तहेव जाव पडिगए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संचाएइ तुब्भे किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं° पडिगए। से नूणं कुंडकोलिया! अट्ठे समट्ठे?
हंता अत्थि[1]॥

महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा-पदं

२९. अज्जोति! समणे भगवं महावीरे [बहवे?][2] समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो! गिहिणो गिहिमज्झावसंता[3] अण्णउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिणवागरणे करेंति, सक्का पुणाइं अज्जो! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अण्णउत्थिया अट्ठेहि य[4] °हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य° निप्पट्ठ-पसिणवागरणा करेत्तए॥

३०. तए णं [ते बहवे?][5] समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति॥

३१. [6]तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, अट्ठमादित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३२. सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं

३३. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं[7] °सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं

---

१. हंता अत्थि अस्य पाठस्यानन्तरमेतावान् पाठः उपलभ्यते, यथा—तं धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो तहा पसंसिओ (क); तं धन्नेसि णं तुमं जहा कामदेवो (ख, घ); तं धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो जाव पडिगता (ग); असौ अत्र अप्रासंगिकः प्रतीयते। कामदेवाध्ययने 'तं धन्नेसि णं तुमं' इत्यादि वाक्यानि देवो ब्रवीति (सू० २।४०)। अत्र च भगवतो महावीरस्य संवादप्रसंगे असौ पाठोस्ति, किन्तु कामदेवाऽध्ययने 'हंता अत्थि' इति पाठस्यानन्तरं—'अज्जोति! समणे भगवं महावीरे' इति सूत्रमस्ति (सू० २।४६) अत्रापि इत्थमेव युज्यते।

२. महावीरे बहवे (२।४६)।

३. गिहिमज्झे वसंता (क, ग); °वसंता णं (ख, वृ)।

४. सं० पा०—अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ°।

५. ते बहवे समणा (२।४७)।

६. २।४८ सूत्रस्य क्रमः अस्माद् भिन्नोस्ति।

७. सं० पा०—बहूहिं जाव भावेमाणस्स।

बीइक्कंताइं। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ[1] •पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं कंपिल्लपुरे नयरे बहूणं जाव[2] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[3] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[4] ॥

३४. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं ॰ धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स उवासगपडिमा-पदं

३५. •[5]तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

३६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

३७. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

३८. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं

---

१. सं० पा०—कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्ति।

२. उवा० १।१३।

३. उवा० १।१३।

४. पू०—उवा० १।५७-५९।

५. सं० पा०—एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ। तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

कुंडकोलियस्स अणसण-पदं

३९. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समाहिमरण पदं

४०. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणज्झए विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

४१. से णं भंते! कुंडकोलिए ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४२. [2]एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

१. उवा० १।५७।

२. सं० पा०—निक्खेवो।

सत्तमं अज्झयणं

सद्दालपुत्ते

उक्खेव-पदं

१. •[1]जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सद्दालपुत्त-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं° पोलासपुरं नामं नयरं। सहस्संबवणं उज्जाणं। जियसत्तू राया ॥

३. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे[3] आजीविओवासए[4] परिवसइ। आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते। "अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" त्ति[5] आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

४. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ताओ एक्का हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ताओ, एक्का हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ताओ, एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं ॥

५. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था ॥

६. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया[6] होत्था ॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३. कुंभकारे इड्ढे (ख)।

४. आजीवितोवासते (क); आजीवितोवासए (ग); आजीवियओवासगे (घ)।

५. ति एवं (ग)।

६ कुंभकारा° (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. तस्स[1] णं बहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं[2] बहवे करए य वारए य पिहडए[3] य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिंजरए य जंबूलए य उट्टियाओ य करेंति। अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं[4] तेहिं बहूहिं करएहि य[5] •वारएहि य पिहडएहि य घडएहि य अद्धघडएहि य कलसएहि य अलिंजरएहि य जंबूलएहि य° उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ॥

सद्दालपुत्तस्स देवसंदेस-पदं

८. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकाल-समयंसि[6] जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

९. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्के[7] देवे अंतियं पाउब्भवित्था ॥

१०. तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं[8] •पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर° परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—एहिइ[9] णं देवाणुप्पिया! कल्लं इहं महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे तीयप्पडुप्पण्णाणागयजाणए[10] अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय[11]-महिय-पूइए[12] सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे[13] वंदणिज्जे[14] •णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते। तं णं तुमं वंदेज्जाहि[15] •णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जाहि। दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ[16], वइत्ता जामेव दिसं[17] पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

---

१. डा०होर्नलसंपादितपुस्तके 'तत्थ' पाठो लभ्यते।
२. कल्लाकल्लं (क, ख, ग)।
३. हेमशब्दानुशासन (१।२०१) 'पिठरे हो वारश्च डः'।
४. कल्लाकल्लं (ग)।
५. सं० पा०—करएहि य जाव उट्टियाहि।
६. पुव्वा° (ख, घ)।
७. एगे (ख)।
८. सं० पा०—सखिंखिणियाइं जाव परिहिए।
९. एहीति (क, ग); एही (ख, घ)।
१०. तीयपच्चुपण्णाणागय° (क); तीयपडुपण्णा-गय° (ख)।
११. प्राचीनलिप्यां वकार-चकारयोः सादृश्यात् केषुचिदादर्शेषु 'वहिय' इति पाठोपि दृश्यते।
१२. पूतिते (क)।
१३. × (क, ख, ग)।
१४. सं० पा०—वंदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे।
१५. सं० पा०—वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि।
१६. वयासी (ग, घ)।
१७. दिसिं (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं

११. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते—से णं महामाहणे उप्पण्ण-णाणदंसणधरे[1] •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे° तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति। तए णं तं अहं वंदिस्सामि[2] •णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं[3] •पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° उवनिमंतिस्सामि॥

महावीर-समवसरण-पदं

१२. तए णं कल्लं[4] •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा° जलंते समणे भगवं महावीरे[5] जाव[6] •जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ°॥

१३. परिसा निग्गया॥

१४. [7]•कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[8] °पज्जुवासइ॥

१५. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे[9] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ।" तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि[10] •णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि

---

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्च-कम्मसंपया।

२. सं० पा०—वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि।

३. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि।

४. सं० पा०—कल्लं जाव जलंते।

५. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए।

६. ओ० सू० १६, २२।

७. सं० पा०—जाव पज्जुवासइ।

८. ओ० सू० ५३-६६।

९. सं० पा०—महावीरे जाव विहरइ।

१०. सं० पा०—वंदामि जाव पज्जुवासामि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए[1] •कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल°पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं[2] •मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ[3] गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता[4] •णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे° पज्जुवासइ ॥

१६. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ[5]-•महालियाए परिसाए जाव[6] धम्मं परिकहेइ °॥

महावीरस्स देवसंदेस-निरूवण-पदं

१७. सद्दालपुत्ताइ[7] ! समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयंसि[8] जेणेव असोगवणिया[9], •तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं° विहरसि । तए णं तुब्भं एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे[10] •सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं° एवं वयासी— हंभो ! सद्दालपुत्ता[11] ! •एहिइ णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे जाव[12] तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं णं तुमं वंदेज्जाहि णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमतेज्जाहि । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।

तए णं तुब्भं तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते -मे णं महामाहणे जाव[13] तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं

---

१. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।
२. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा ।
३. सयाओ (घ) ।
४. सं० पा०—णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ ।
५. सं० पा०— महइ जाव धम्मकहा समत्ता ।
६. ओ० सू० ७१-७७ ।
७. °दि (ग) ।
८. पुव्वा° (ख, घ) ।
९. सं० पा०—असोगवणिया जाव विहरसि ।
१०. सं० पा०—अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी ।
११. सं० पा०—सद्दालपुत्ता त चेव सव्व जाव पज्जुवासिस्सामि ।
१२. उवा० ७।१० ।
१३. उवा० ७।११ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति। तए णं तं अहं वंदिस्सामि णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतिस्सामि °। से नूणं सद्दालपुत्ता! अट्ठे समट्ठे?

हंता अत्थि।

तं नो खलु सद्दालपुत्ता! तेणं देवेणं गोसालं मंखलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते॥

सद्दालपुत्तस्स निवेदण-पदं

१८. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे–एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे[1] •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे ° तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते। तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढ-फलग[2] •सेज्जा-संथारएणं ° उवनिमंतेत्तए–एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–एवं खलु भंते! मम पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया। तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ[3]-•फलग-सेज्जा °-संथारयं ओगिण्हित्ता[4] णं विहरह॥

महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं

१९. तए णं से समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स 'पंचसु कुंभारावणसएसु'[5] फासु-एसणिज्जं पाडिहारियं पीढ-फलग[6]-•सेज्जा °-संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरइ॥

२०. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ वाताहतयं[7] कोलालभंडं अंतो सालाहिंतो बहिया नीणेइ, नीणेत्ता आयवंसि[8] दलयइ॥

---

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया।
२. सं० पा०—पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए।
३. सं० पा०—पीढ जाव संथारयं।
४. तुगिण्हित्ता (क)।
५. पंचकुंभ ° (ख, घ)।
६. सं० पा०—फलग जाव संथारयं।
७. वायाहतयं (क, ग); वायाहययं (ख)।
८. आतपंसि (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडे कहं[1] कतो ?

२२. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—एस णं भंते ! पुव्वि मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं तिम्मिज्जइ[2], तिम्मिज्जित्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जित्ता चक्के आरुभिज्जति[3], तओ बहवे करगा य[4] •वारगा य पिहडगा य घडगा य अद्धघडगा य कलसगा य अलिंजरगा य जंबूलगा य° उट्टियाओ य कज्जंति ।।

२३. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडे किं उट्ठाणेणं[5] •कम्मेणं बलेणं वीरिएणं° पुरिसक्कार-परक्कमेणं कज्जंति, उदाहु अणुट्ठाणेणं[6] •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जंति ?

२४. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—भंते ! अणुट्ठाणेणं[7] • अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं । नत्थि उट्ठाणे इ वा[8] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा° पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा ।।

२५. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेज्ज[9] वा विक्खिरेज्ज वा भिंदेज्ज वा अच्छिंदेज्ज[10] वा परिट्ठवेज्ज वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स कं[11] दंडं वत्तेज्जासि ?

भंते ! 'अहं णं'[12] तं पुरिसं आओसेज्ज वा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा महेज्ज[13] वा

---

१. × (क, ख, ग) प्रायो बहुषु आदर्शेषु केवलं 'कतो' पाठो लभ्यते, उत्तरसूत्रे 'कज्जंति' इति प्रयोगो विद्यते, तेन प्रश्नसूत्रे 'कहं कतो' इति पाठः उपयुज्यते ।

२. तमिज्जइ (ख); तिमिज्जइ (ग); निमिज्जइ (घ); आर्द्रीकरणार्थे 'तिम्म' धातुर्विद्यते । तेन 'तिम्मिज्जइ' पाठः स्वीकृतः । 'त-न' वर्णयोः प्राचीनलिप्यां सादृश्येन परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते ।

३. आरोहिज्जइ (ख); आरुहिज्जति (घ) ।

४. सं० पा०—करगा य जाव उट्टियाओ ।

५. सं० पा०—उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार ।

६. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार ।

७. सं०पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार ।

८. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार ।

९. 'ख, ग' प्रत्योः 'ज्ज' स्थाने सर्वत्र 'ज्जा' विद्यते ।

१०. विच्छंदेज्ज (वृपा) ।

११. किं (ख, घ) ।

१२. अहण्णं (ग, घ) ।

१३. महेज्ज (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निब्भच्छेज्ज वा, अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा ।।

२६. सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं[1] वा कोलालभंडं अवहरइ वा[2] •विक्खिरइ वा भिंदइ वा अच्छिंदइ वा° परिट्ठवेइ वा; अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ; नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेसि[3] वा हणेसि वा[4] •बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा° अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा[5] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा, नियता[6] सव्वभावा। 'अहं णं'[7] तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा[8] पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेइ वा विक्खिरेइ वा भिंदेइ वा अच्छिंदेइ वा° परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा[9] •भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरइ; तुमं वा तं पुरिसं आओसेसि वा[10] •हणेसि वा बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा, अकाले चेव जीवियाओ° ववरोवेसि, तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा[11] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा°, नियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा ।।

२७. एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए संबुद्धे ।।

सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

२८. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए धम्मं निसामेत्तए ।।

२९. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[12] धम्मं परिकहेइ ।।

३०. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[13] •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए

---

१. पक्कोल्लयं (ग, घ) ।
२. सं० पा०—अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ ।
३. आतोससि (क, ग) ।
४. सं० पा०—हणेसि वा जाव अकाले ।
५. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।
६. निग्निया (क); णितिया (ग) ।
७. अहण्णं (क, ग, घ) ।
८. सं० पा०—वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ ।
९. सं० पा०—अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ ।
१०. सं० पा०—आओसेसि वा जाव ववरोवेसि ।
११. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव नियता ।
१२. ओ० सू० ७१-७७ ।
१३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, नवरं एगा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

३१. तए णं से सद्दालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता° समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे[2], जेणेव सए गिहे, जेणेव अग्गिमित्ता भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए[3] ! °मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए°। तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वंदाहि[4] °णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं[5] पडिवज्जाहि॥

३२. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ॥

हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं।

१. पू०—उवा० १।२४-४५।

२. नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं (क, ख, ग, घ); प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रानुसारेण असौ पाठः अनावश्यकः प्रतिभाति। नास्यार्थसंगतिरपि विद्यते।

३. सं० पा०—देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं। अस्य पाठस्य पूर्तिः प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रेण जायते। तत्र 'समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे' एतादृशः पाठो नास्ति। संभवतः पाठस्य संक्षेपीकरणे किंचित् परिवर्तनं जातम्।

४. सं० पा०—वंदाहि जाव पज्जुवासाहि।

५. गिधिधम्म (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पदं

३३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी —खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं[1] समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचिय[2]-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं[3] नीलुप्पलकयामेलएहिं[4] पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

३४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[5] •सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव[6] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

३५. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया[7] •कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल° पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं[8] •मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो[9] • आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता° वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे[10] •सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं° पंजलियडा[11] ठिइया चेव पज्जुवासइ ।।

३६. तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[12] धम्मं परिकहेइ ।।

---

१. पुस्तकान्तरे यानवर्णको दृश्यते (वृ) ।
२. °खइय (ख) ।
३. नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।
४. °कयामलएहिं (ख); °कयमालएहिं (ग) ।
५. सं०पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।
६. उवा० १।४७ ।
७. सं० पा० —ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
८. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा° ।
९. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव वंदइ ।
१०. सं० पा०—णाइदूरे जाव पंजलियडा ।
११. पंजलिउडा (ख, घ) ।
१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

३७. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता° समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं[2], •पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते। अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से° जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा[3] •राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइया. नो खलु अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता[4] •अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए°। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि[5]।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

३८. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ,पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पोलासपुराओ नगराओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ॥

सद्दालपुत्तस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[6] जाव[7] •समणे

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठा समणं।

२. सं० पा०—पावयणं जाव जहेयं।

३. सं० पा०—भोगा जाव पव्वइया।

४. सं० पा०—भवित्ता जाव अहं।

५. पडिवज्जामि (क, ख, ग, घ)।

६. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।

७. उवा० १।५५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अग्गिमित्ताए-समणोवासिय-चरिया-पदं

४१. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[1] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी° विहरइ ॥

गोसालस्स आगमण-पदं

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निग्गंथाणं दिट्ठिं पवण्णे[2], तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गंथाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए त्ति कट्टु—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसंघ-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता कतिवएहिं[3] आजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाति[4] नो परिजाणति[5], अणाढामाणे[6] अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पदं

४४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स गुणकित्तणं करेइ[7]—आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे ?

४५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—के णं देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?
तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ।

---

१. उवा० १।५६ ।
२. पडिवण्णे (क, घ) ।
३. कतिवतेहिं (क); कइवएहिं (ख, घ) ।
४. अढाति (क, ग) ।
५. परिजाणाति (घ) ।
६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।
७. करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?
एवं खलु सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे[1] •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे° तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ॥

४६. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महागोवे ?
के णं देवाणुप्पिया ! महागोवे ?
समणे भगवं महावीरे महागोवे ।
से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया[2] ! •एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे° महागोवे ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दंडेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावाडं साहत्थिं संपावेइ । से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महागोवे ॥

४७. आगए[3] णं देवाणुप्पिया ! इहं महासत्थवाहे ?
के[4] णं देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहे ?
सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ।
से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[5] •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे° विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे[6] धम्ममएणं[7] पंथेणं[8] सारक्खमाणे निव्वाणमहापट्टणे[9] साहत्थिं संपावेइ । से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ॥

४८. आगए[10] णं देवाणुप्पिया ! इहं महाधम्मकही ?

---

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च ।
२. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव महागोवे ।
३. आगदे (क) ।
४. से के (क, ख, ग, घ) ।
५. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।
६. × (क) ।
७. धम्ममतेणं (क, ग) ।
८. पथेणं (घ) ।
९. निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे (ख, घ) ।
१०. महासार्थवाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे इदमपरमधीयते—वृत्तावस्योल्लेखस्यानुसारेण 'महाधम्मकही' इत्यालापकः पाठान्तररूपेण स्वीकृतोऽस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के[1] णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?
समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही।
से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्म-तमपडल[2]-पडोच्छण्णे बहूहिं अट्ठेहि य[3] •हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिण°वागरणेहि य चाउरंताओ संसारकंताराओ साहत्थि नित्थारेइ। से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ॥

४९. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?
के[4] णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?
समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए।
से केणट्ठेणं[5] •देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जा-मए ?°
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[6] •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे° विलुप्पमाणे बुड्डमाणे निबुड्डमाणे उप्पियमाणे[7] धम्ममईए[8] नावाए निव्वाण-तीराभिमुहे साहत्थि संपावेइ। से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्ठवणा-पसिण-पदं

५०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुब्भे[9] णं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया[10] इयदच्छा इयपट्ठा[11] इयनिउणा इयनयवादी इयउव-एसलद्धा[12] इयविण्णाणपत्ता। पभू णं[13] तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे।

---

१. से के (क, ख, ग, घ)।
२. पडल (क)।
३. सं० पा०—अट्ठेहि य जाव वागरणेहि।
४. से के (क, ख, घ)।
५. सं० पा०—केणट्ठेणं एवं।
६. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे।
७. उप्पिमाणे (क)।
८. धम्ममतीते (क, ग)।
९. तुब्भं (ग)।
१०. इयच्छेयाओ (ख)।
११. इयपत्तट्ठा (वृपा)।
१२. अस्यानन्तरं वृतौ 'इयमेधाविणो' अस्य पाठान्तरस्य उल्लेखोस्ति।
१३. णं भंते ! (क, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं[1] •धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया° महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?

सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगवं[2] •बलवं अप्पायंके थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठंतरोरुसंघायपरिणए घणनिचियवट्टवलिय-खंधे लंघण-पवण-जवण-वायाम-समत्थे चम्मेट्ठ-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचिय-गत्ते उरस्सबलसमन्नागए तालजमलजुयलबाहू छेए दक्खे पत्तट्ठे° निउणसिप्पो-वगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कुडं वा तित्तरं[3] वा वट्टयं वा लावयं वा कवोयं वा कविंजलं[4] वा वायसं वा सेणयं[5] वा, हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिंगंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं-जहिं गिण्हइ, तहिं-तहिं निच्चलं निप्फंदं[6] करेइ[7], एवामेव[8] समणे भगवं महावीरे ममं बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य[9] •पसिणेहि य कारणेहि य° वागरणेहि य जहिं-जहिं गिण्हइ, तहिं-तहिं निप्पट्ठ-पसिणवागरणं करेइ। से तेणट्ठेणं सद्दाल-पुत्ता ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं[10] •धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया° महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ॥

५१. तए णं से सद्दालपुत्ते ! समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जम्हा णं 'देवाणुप्पिया ! तुब्भे'[11] मम धम्मायरियस्स[12] •धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ° महावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं करेह[13], तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ[14]-•फलग-सेज्जा°-संथारएणं उवनिमंतेमि, नो चेव णं धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा। तं गच्छह णं तुब्भे मम कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ-फलग[15]-•सेज्जा-संथारयं° ओगिण्हित्ता णं[16] विहरह ॥

५२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ,

---

१. सं० पा०—धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं।
२. सं० पा०—जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए।
३. तितरं (घ)।
४. कविंजलि (घ)।
५. सण्हं (क); सेण्णयं (ख)।
६. निप्पंदं (क)।
७. धरेइ (क, ख, ग)।
८. एवमेव (ख, ग)।
९. सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरणेहि।
१०. सं० पा०—धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं।
११. तुब्भे देवाणुप्पिया (क)।
१२. सं० पा०—धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स।
१३. करेसि (ख)।
१४. सं० पा०—पीढ जाव संथारएणं।
१५. सं० पा०—फलग जाव ओगिण्हित्ता।
१६. णं उवसंपज्जित्ता णं (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसुणेत्ता कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ[1]-•फलग-सेज्जा-संथारयं॰ ओगिण्हित्ता णं विहरइ ॥

५३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए[2] वा, ताहे संते तंते परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं

५४. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील[3]-•व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं॰ भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वीइक्कंता। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'[4] पुव्वरत्तावरत्तकाल[5]•समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[8] ॥

५५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए॰ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं[9] उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

---

१. सं० पा०--पीढ जाव ओगिण्हित्ता।

२. विपरिणावित्तए (ग)।

३. सं० पा०--सील जाव भावेमाणस्स।

४. × (क, ख, ग, घ)।

५. सं० पा०--पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स। संक्षेपीकरणपद्धतौ प्रायो नैकरूपता लभ्यते। क्वचित् 'जाव' शब्दानन्तरं संक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निर्दिश्यते क्वचिच्च पूर्ववर्तिशब्दः। अत्रापि इत्थमेव विद्यते। तेन द्वितीयाध्ययनस्याधारेणात्र 'दब्भसंथारोवगए' इति पर्यन्तं पाठः पूरितः।

६. उवा० १।१३।

७. उवा० १।१३।

८. पू०--उवा० १।५७-५९।

९. धम्मं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्तस्स देवरूव-कय-उवसग्ग-पदं

५६. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ॥

° जेट्ठपुत्त

५७. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल[1]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्द-सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

५८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

५९. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

---

१. सं० पा०—नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ नवरं एक्केक्के पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ जाव कणीयसं घाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ ।

२. उवा० २।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ।।

६१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ ।।

६२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

° मज्झिमपुत्त

६३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

६४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ।।

६५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[7] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

६६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[8] विहरइ ।।

---

१. उवा० २।२३ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२२ ।
५. उवा० २।२३ ।
६. उवा० २।२४ ।
७. उवा० २।२२ ।
८. उवा० २।२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।।

६८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव[2] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

°कणीयसपुत्त

६९. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

७०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ।।

७१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[7] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

७२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[8] विहरइ ।।

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२७ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२२ ।
५. उवा० २।२३ ।
६. उवा० २।२४ ।
७. उवा० २।२२ ।
८. उवा० २।२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ ।।

७४. [2]तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव[3] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

°अग्गिमित्ताभारिया

७५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया[5] ! जाव[6] •जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, 'तो ते'[7] अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं[8] साओ[9] गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट[10]-•वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।।

७६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[11] विहरइ ।।

७७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[12] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

---

१. उवा० २।२४ ।

२. पूर्ववर्ति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृतं सूत्रमत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य संकेतः प्राप्तोस्ति । संभवतः संक्षेपीकरणे परित्यक्तमिदमभूत् । अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकारं सूत्रं लभ्यते—'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ' । नैतद् अत्र उपयुक्तमस्ति ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. सं० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजसि ।

६. उवा० २।२२ ।

७. तओ (क, ख, ग, घ) ।

८. तं ते (क, ख, ग, घ) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि ।

११. उवा० २।२३ ।

१२. उवा० २।२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासया[1] ! •जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि° ॥

सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पदं

७८. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था[3]—•अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति,° जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं[4] •साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ, जा वि य णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया[5] •धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता° समसुहदुक्खसहाइया[6], तं पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएत्तए। तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए[7], •से वि य आगासे उप्पइए, तेण च खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

अग्गिमित्ताए पसिण-पदं

७९. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं

८०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए

---

१. सं० पा०—समणोवासया त चेव भणइ।

२. उवा० २।२२।

३. सं० पा०—समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिंतेइ।

४. सं० पा०—पुत्तं जाव आइंचइ।

५. सं० पा०—भारिया जाव सम°।

६. ममसुहदुक्ख° (ख)।

७. सं० पा०—उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं। नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ। सेसं जहा चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चुए विमाणे उववातो जाव महाविदेहे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[1] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[2] विहरामि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[8] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि। एवं कणीयसं पुत्तं जाव[9] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि। तए ण से पुरिसे ममं अभीयं जाव[10] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[11] जइ णं तुमं अज्ज

---

१. उवा० २।२२।
२. उवा० २।२३।
३. उवा० २।२४।
४. उवा० २।२२।
५. उवा० २।२३।
६. उवा० २।२४।
७. उवा० २।२७।
८. उवा० ७।६२-६७।
९. उवा० ७।६८-७३।
१०. उवा० २।२४।
११. उवा० २।२२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[1] दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठपुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, तुमं पि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ।।

पायच्छित्त-पदं

८१. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमयं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ।।

८२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्ताए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं

---

१. उवा० २।२४ । २. उवा० २।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

८३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

८४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

८५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

८६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं

८७. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरि-सक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे,जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिम-मारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणव-कंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

८८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहि-पत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६. [1]°एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

---

१. सं० पा०—निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं अज्झयणं

महासतए

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

महासतयगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।।

३. तत्थ णं रायगिहे नयरे महासतए[3] नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[4] •जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।।

५. से णं महासतए गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था °।।

६. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ[8] तेरस भारियाओ होत्था --

---

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. महासतने (क); महासययं (ख) ।

४. सं० पा०—अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकंसाओ पवि अट्ठवया दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

५. उवा० १।११ ।

६,७. उवा० १।१३ ।

८. रेवई ° (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहीण[१]-•पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीराओ जाव[२] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ०॥

७. तस्स णं महासतयस्स रेवतीए भारियाए कोलहरियाओ[३] अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था। अवसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं कोलहरिया[४] एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

महावीर-समवसरण-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

९. परिसा निग्गया ॥

१०. •[५] कूणिए राया जहा, तहा सेणिओ निग्गच्छइ जाव[६] पज्जुवासइ ॥

११. तए णं से महासतए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहस्स नयरस्स बहिया गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

---

१. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवाओ।
२. उवा० १।१४।
३. कोलघरियाओ (ख)।
४. कोलघरिया (क, ख, ग, घ)।
५. सं० पा०—जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ।
६. ओ० सू० ५३-६९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. तए णं समणे भगवं महावीरे महासतयस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[1] धम्मं परिकहेइ ॥

१३. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१४. तए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१५. तए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[2]° सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[3]। अट्ठ वया। रेवतीपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ[4]। इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लिं 'च णं'[5] कप्पइ मे बेदोणियाए[6] कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से महासतए समणोवासए जाए--अभिगयजीवाजीवे[7] जाव[8] °समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे° विहरइ ॥

---

१. ओ० सू० ७१-७७।
२. पू०—उवा० २४-४५।
३. सकंसाओ उच्चारेति (क, ख, ग)।
४. पच्चक्खाइ सेसं सव्वं तहेव (क, ख, ग, घ)।
५. × (ख)।
६. पेदोणि° (क)।
७. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।
८. उवा० १।५५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ जणवयविहार-पदं

१७. तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ[1] ॥

रेवतीए चिंता-पदं

१८. तए णं तीसे रेवतीए गाहावइणीए अण्णदा कदाइ[2] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंब[3]•जागरियं जागरमाणीए• इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमासिं दुवालसण्हं सपत्तीणं[4] विघातेणं[5] नो संचाएमि[6] महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालस वि सवत्तीओ[7] अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्ता एतासिं[8] एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं[9] •माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी• विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतराणि य छिद्दाणि य 'विरहाणि य'[10] पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

रेवतीए सवत्ती-उद्दवण-पदं

१९. तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं[11] उद्दवेइ, छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेत्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं, एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जित्ता महासतएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ॥

रेवतीए मंसमज्जासायण-पदं

२०. तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया[12] •मंसगढिया मंसगिद्धा

---

१. प्राक्तनेषु अध्ययनेषु भगवतो विहारसूत्रं पूर्वं तदुत्तरं च श्रावकभवनसूत्रं लभ्यते। इह च पूर्वं श्रावकभवनसूत्रं तदुत्तरं च भगवतो विहारसूत्रं वर्तते। असौ क्रमः समीचीनः प्रतिभाति।

२. कयाइं (घ)।

३. सं० पा०—कुडुंब जाव इमेयारूवे।

४. पत्तीणं (क); सवत्तीणं (ख)।

५. विघाएणं (ख, घ)।

६. संबादेमि (ख)।

७. सवत्तीयाओ (ख)।

८. एताणं (क); एयासिं (ख, घ)।

९. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरित्तए।

१०. विहराणि य विवराणि य (क); विवराणि य (ख)।

११. सत्थप्पतोतेणं (क, ग)।

१२. सं० पा०—मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा। मंसेसु मुच्छिया (क, ख, घ); मंससमुच्छिया (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंस॰अज्झोववण्णा बहुविहेहिं मंसेहिं[1] सोल्लेहि य तलिएहि य[2] भज्जिएहि य[3] 'सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसण्णं च'[4] आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ।।

अमाघाय-पदं

२१. तए णं रायगिहे नयरे अण्णदा कदाइ अमाघाए घुट्ठे यावि[5] होत्था ।।

२२. तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया मंसगढिया मंसगिद्धा मंसअज्झोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— तुब्भे देवाणुप्पिया ! ममं कोलहरिएहिंतो[6] वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए उद्दवेह, उद्दवेत्ता ममं उवणेह ।।

२३. तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहिंतो[7] वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए[8] वहेंति,[9] वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए उवणेंति ।।

२४. तए णं सा रेवती गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं[10] सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ।।

महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

२५. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय[11]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं॰ भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वीइक्कंता[12] । •पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं जाव[13] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[14] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[15] ।।

---

१. मंसेहि य (क, ख, ग, घ) ।
२. × (क, ग, घ) ।
३. × (घ) ।
४. सुरं च पसन्नं च (क) ।
५. वि (क) ।
६. घोलघरिए (क) ।
७. कोल्ल॰ (घ) ।
८. गोणपोतलए (क) ।
९. उवहंति (ख); गहिंति (ग, घ) ।
१०. गोमंसेहिं (क, ग) ।
११. सं॰ पा॰—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स ।
१२. स॰ पा॰—वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं ।
१३. उवा॰ १।१३ ।
१४. उवा॰ १।१३ ।
१५. पू॰—उवा॰ १।५७-५९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. तए णं से महासतए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं॰ धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।।

महासतगस्स अणुकूल-उवसग्ग-पदं

२७. तए णं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं 'विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी'[1] जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी[2]-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! 'किं णं'[3] तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं[4] •माणुस्सयाइं भोगभोगाइं॰ भुंजमाणे नो विहरसि ?

२८. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे[5] अपरियाणमाणे[6] तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

२९. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो[7] ! •महासतया ! समणोवासया[8] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

---

१. कड्ढिज्जमाणी-कड्ढिज्जमाणी (क); विकट्टमाणी-विकट्टमाणी (ख)।
२. दंसेमाणी २ (ख)।
३. किण्णं (घ)।
४. सं० पा०—उरालाइं जाव भुंजमाणे।
५. अणाढाइज्जमीणे (क); अणाढाइज्जमाणे (ख, ग, घ)।
६. अपरियाणिज्जमीणे (क); अपरियाणिज्जमाणे (ख,ग,घ)।
७. सं० पा०—हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव जाव अणाढायमाणे।
८. पू०—उवा० ८।२७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ°, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ।।

३१. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएण अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

३३. [1]•तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।।

३४. तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ° ।।

३५. तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं[2] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए° किसे धमणिसंतए जाए ।।

महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं[3] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-

---

१. सं० पा०—पढम अहासुत्त जाव एक्कारस्स वि ।

२. सं० पा०—उरालेणं जाव किसे ।

३. स० पा०—उरालेण तवोकम्मेण जहा आणंदो तहेव अपच्छिम° ।

४. उवा० १।५७° ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° 'अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए'[1] भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।।

महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

३७. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणणं[2] •सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं° खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, [3]•दक्खिणे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ° उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, [उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ ?][4] अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ।।

महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग्ग-पदं

३८. तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ मत्ता[5] •लुलिया विइण्णकेसी° उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए'[6], तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासतयं[7] •समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया[8] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

३९. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो

---

१. °संलेहणाए झूसियसरीरे (क,ख,ग,घ) ।

२. सं० पा०—अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं ।

३. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं उत्तरे ण ।

४. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठः प्रयुक्तादर्शेषु कस्मिन्नपि नोपलभ्यते । 'अहे इमीसे रयणप्पभाए'''जाणइ पासइ' एष पाठः 'क' प्रतौ नास्ति । संभवतः संक्षिप्तलिपिपद्धत्या परिवर्तनमिदं जातम् । अत्र द्वावपि पाठौ युज्येते ।

५. सं० पा०—मत्ता जाव उत्तरिज्जयं ।

६. जेणेव महासत्तए समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क,ख,ग,घ) । अत्र संभवतो लिपिदोषेण क्रमपरिवर्तनं जातम् । किन्तु पूर्वसूत्रस्य (सू. २६) अनुसारेण स्वीकृतपाठ एव उपयुज्यते ।

७. सं० पा०—महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! तहेव ।

८. पू०—उवा० ८।२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

४०. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया[1] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?०

महासतगस्स विक्खेव-पदं

४१. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[2] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी– हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंत सत्तरत्तस्स अलसएणं[3] वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहि-पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥

४२. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी[4]— रुट्ठे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं[5] अहं केणावि[6] कु-मारेणं मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय-भया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा[7] •चिंतासोगसागरसंपविट्ठा करयल-पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया° झियाइ ॥

४३. तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं[8] वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

---

१. पू०—उवा० ८।२७।

२. आसुरुत्त (क,ख,ग,घ)।

३. आलस्सएणं (क); आलसएणं (ख)।

४. समाणी एवं च (क,ग,घ); समाणी एवं वयासी (ख); किन्तु प्रकरणानुसारेण नेवं युज्यते।

५. × (ग, घ)।

६. केणति (क); केण वि (ख, घ)।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ।

८. आलस्सएण (क); आलसएणं (ख); अलस्सएणं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीर-समवसरण-पदं

४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥

४५. परिसा पडिगया ॥

महासतगस्स अंतिए गोतम-पेसण-पदं

४६. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे ममं अंतेवासी महासतए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाण-पडियाइक्खिए, कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स रेवती गाहावइणी मत्ता[1] •लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं° विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्माय[2] •जणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया[3] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं° दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी।

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी[4]—•हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंतो सत्त-रत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिसि।

नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम[5] •मारणंतियसंलेहणा-

---

१. सं० पा०—मत्ता जाव विकड्ढमाणी।

२. सं० पा०—मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चं पि।

३. पू०—उवा० ८।२७।

४. सं० पा०—वयासी जाव उववज्जिहिसि।

५. सं० पा०—अपच्छिम जाव झूसियस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झूसणा॰-झूसियस्स[1] भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स[2] परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं[3] अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए। तं गच्छ णं देवाणुप्पिया! तुमं महासतयं समणोवासयं एवं वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम[4]•मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स॰ भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं[5] •तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं॰ वागरित्तए तुमे य णं देवाणुप्पिया! रेवती गाहावइणी संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरिया। तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि[6]•पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि॰ अहारिहं[7] पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि॥

गोतमस्स आगमण-पदं

४७. तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव महासतगस्स समणोवासगस्स गिहे[8] जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ॥

महासतगस्स वंदण-पदं

४८. तए णं से महासतए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ[9]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण॰ हियए भगवं गोयमं वंदइ नमंसइ॥

महावीरुत्तस्स कहण-पदं

४९. तए णं से भगवं गोयमे महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणोवासगस्स अपच्छिम[10]•मारणंतियसंलेहणा-

---

१. झूसियस्स सरीरस्स (ख, ग, घ)।
२. पडियाइक्खितस्स (क)।
३. × (ग)।
४. सं० पा०—अपच्छिम जाव भत्तपाण।
५. सं० पा०—संतेहिं जाव वागरित्तए।
६. सं० पा०—आलोएहि जाव अहारिहं।
७. जहारिहं (क, ख, ग, घ)।
८. अस्यानन्तरं 'जेणेव पोसहसाला' इति पाठः अपेक्ष्यते। किन्तु कस्मिन्नप्यादर्शे नोपलब्धोऽस्ति।
९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए।
१०. सं० पा०—अपच्छिम जाव वागरित्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं° वागरित्तए। तुमे णं देवाणुप्पिया! रेवती गाहावइणी संतेहिं[1] •तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं° वागरिया। तं णं तुमं देवाणुप्पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[2] •पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जाहि ॥

महासतगस्स पायच्छित्त-पदं

५०. तए णं से महासतए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ[3], पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[4] •पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ° अहारिहं[5] पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

गोयमस्स पडिणिक्खमण-पदं

५१. तए णं से भगवं गोयमे महासतगस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५२. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

५३. तए णं से महासतए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय[6]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडेंसए[7] विमाणे

१. सं० पा०—संतेहिं जाव वागरिया!
२. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
३. पडिच्छति (क)।
४. सं० पा०—आलोएइ जाव अहारिहं।
५. जहारिहं (क, ख, ग, घ)।
६. सं० पा०—सीलव्वयगुणेहिं जाव भावेत्ता।
७. °वडिंसए (ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४. [१]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. सं० पा०—निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं

नंदिणीपिया

उक्खेव-पदं

१. •[1]जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? •

नंदिणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया ॥

३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नंदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[3] •जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स° चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

५. [5]•से णं नंदिणीपिया गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३. सं० पा०—अड्ढे। चत्तारि।

४. उवा० १।११।

५. सं० पा०—अस्सिणी भारिया। सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सामी बहिया विहरइ।

६. उवा० १।१३।

७. उवा० १।१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स अस्सिणी नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

८. परिसा निग्गया ॥

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[2] पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से नंदिणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"

तं महप्फलं खलु भो! देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे नंदिणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[3] धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

नंदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं

---

१. उवा० १।१४।

२. ओ० सू० ५३-६९।

३. ओ० सू० ७१-७७।

निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी —सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

१४. तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावय-धम्मं पडिवज्जइ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ॥

नंदिणीपियस्स समणोवासगचरिया-पदं

१६. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए[2]—°अभिगयजीवाजीवे जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ॥

अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा अस्सिणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी° विहरइ॥

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।
२. सं० पा०—जाए जाव विहरइ।
३. उवा० १।५५।
४. उवा० १।५६।

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण[1]-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं[2], •पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं जाव[3] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[4] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[5] ॥

१९. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

२१. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२२. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।

२३. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

---

१. सं० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

२. सं० पा०—वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ । धम्मपण्णत्तिं । वीसं वासाइं परियागं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदणीपियस्स अणसण-पदं

२४. तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिम-मारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

नंदणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। नंदिणीपि-यस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से णं भंते ! नंदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्ख-एणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७. [2]°एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं नवमस्स अज्झय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

---

१. उवा० १।५७। २. सं० पा०—निक्खेवो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं अज्झयणं

लेइयापिता

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?०

लेइयापितागाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया ।।

३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए लेतियापिता[3] नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[4] •जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४. तस्स णं लेइयापियस्स गाहावइस्स० चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।।

५. [6]•से णं लेइयापिता गाहावई बहूणं जाव[7] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।।

---

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. सालिहीपिया (ख) ।

४. सं० पा—अड्ढे । चत्तारि ।

५. उवा० १।११ ।

६. सं०पा०–फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे। जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ। एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे।

७. उवा० १।१३ ।

८. उवा० ११३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तस्स णं लेतियापियस्स गाहावइस्स फग्गुणी नामं भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

८. परिसा निग्गया ॥

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[2] पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से लेतियापिता गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"
तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे लेतियापियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-याए परिसाए जाव[3] धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

लेतियापियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से लेतियापिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-

---

१. उवा० १।१४।

२. ओ० सू० ५३-६९।

३. ओ० सू० ७१-७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से लेतियापिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

२. उवा० १।५५।

३. उवा० १।५६।

पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था —एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[3] ॥

१९. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

लेतियापियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

२१. तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२२. तए णं से लेतियापिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२३. तए णं से लेतियापिता समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

लेतियापियस्स अणसण-पदं

२४. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. उवा० १।१३।

२. उवा० १।१३।

३. पू०—उवा० १।५७-५९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से लेतियापिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, बीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा० सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से णं भंते! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ[2] ॥

निक्खेव-पदं

२७. एवं खलु जंबू! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

---

१. उवा० १।५७।

२. अध्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण स्वीकृतं संग्रहवाक्यमुपलभ्यते। वृत्त्यनुसारेण नैतद् संभाव्यते—दसण्ह वि पण्णरसमे संवच्छरे वट्टमाणे णं चिंता। दसण्ह वि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते'[1] ।।

परिसेसो

उवासगदसाणं सत्तमस्स अंगस्स एगो सुयखंधो । दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति । तओ सुयखंधो समुद्दिस्सइ । तओ सुयखंधो अणुण्णविज्जइ दोसु दिवसेसु अंगं तहेव ।।

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर परिमाण—८७८१२

अनुष्टुप् श्लोक-परिमाण—२७४४

१. आदर्शेषु एतद् निगमनवाक्यं नोपलभ्यते, किन्तु वृत्तौ अस्योल्लेखो विद्यते—'एवं खलु जंबू' ! इत्यादि उवासगदसानिगमनवाक्यमध्येयमिति ।

२. अतोग्रे एताः संग्रहगाथा आदर्शेषु नोपलभ्यन्ते । वृत्तौ पुस्तकान्तरप्राप्तेरुल्लेखोस्ति, यथा—पुस्तकान्तरे संग्रहगाथा उपलभ्यन्ते ताश्चेमाः—

वाणियगामे चंपा, दुवे य वाणारसीए नयरीए ।
आलभिया य पुरवरी, कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ।।१।।
पोलासं रायगिहं, सावत्थीए पुरीए दोन्नि भवे ।
एए उवासगाणं, नयरा खलु होंति बोद्धव्वा ।।२।।
सिवनन्द-भद्द-सामा, धन्न-बहुला पूस-अग्गिमित्ता य ।
रेवइ-अस्सिणि तह, फग्गुणी य भज्जाण नामाइं ।।३।।
ओहिण्णाण-पिसाए, माया वाहि-धण-उत्तरिज्जे य ।
भज्जा य सुव्वया, दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ।।४।।
अरुणे अरुणाभे खलु, अरुणप्पह-अरुणकंत-सिट्ठे य ।
अरुणज्झए य छट्ठे, भूय-वडिंसे गवे कीले ।।५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१६।४१	१।१६।२८
अगडे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेणं जाव आसणेणं	१।१६।१९७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।९।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।९८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७९	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३,५६,१५४,१५५,१६९,२०४,२०५; १।२।१२,७१;१।५।११८,१२४;१।७।२५; १।१६।११८,२८५;२।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्ठदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणिं	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्ठमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि	२।८।१,२	२।२।१,२
अट्ठाइं जाव नो वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाइं जाव वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अड्ढा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अड्ढा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियव्वो	१।१।१९४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।९७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्णं च तं विउलं	१।८।२०७	१।८।२०५
अण्णमण्णं जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्थामा जाव अधारणिज्ज०	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निंबोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३९	१।१।१०४
अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए	१।५।११८;१।१९।२८	१।५।१२४
अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिसिंचइ जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।९३-९५	१।१।११७-११९
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०९	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग संज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अवंगुणेइ जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरकंका जाव सण्णिवाडिया	१।१६।२७६	१।१६।२६२
अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं	१।५।९९-१०१	१।५।३४-३८
अवहरइ जाव तालेइ	१।१८।१२	१।१८।८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	१।१६।२२०	१।१६।२१६
अवीरिए जाव अधारणिज्ज०	१।८।१६६	१।१६।२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	१।१६।२४६	१।१६।२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	१।८।१७२	१।८।१५९
असणं जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१२	१।२।१२
असणं जाव दवावेमाणी	१।१४।३९	१।१४।३८
असणं जाव परिभुंजेमाणी	१।२।२०	१।२।१४
असणं जाव परिवेसेइ	१।२।५२,५३	१।२।३७,३८
असणं जाव विहरइ	१।१२।४	१।२।१४
असणं मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता	१।७।२२	१।७।६
असण जाव पसन्नं	१।१६।१५२	१।१६।१५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव	१।१६।५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कंडरीयं	१।१९।३४	१।१९।३३
अहं जाव अणेगभूयभावभविए	१।५।७६	१।५।७६
अहं जाव सुया	१।५।७६	१।५।७६
अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्ध पीढ० विहरामि	१।५।१२४	१।५।११७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१।१८।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१।१८।१९	१।१८।१९
अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता	१।१।२०१	१।१।१९८
अहापडिरूवं जाव विहरइ (त्ति)	१।१।९७;१।१६।११	१।१।४
अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण	१।५।११६	१।५।११५
अहासुत्तं जाव सम्मं	१।१।२०१	१।१।१९८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए	१।८।४२	वृत्ति
अहीण जाव सुरूवे	१।१।१६	ओ० सू० १५
अहो णं तं चेव	१।१२।१६	१।१२।१३
आइगरे जाव विहरइ	२।१।२०	१।१।९५
आइण्ण वेढो	१।१७।१४	वृत्ति

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	१।१६।१८८	१।१६।१८९
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७;१।१६।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	१।१६।१९०	१।१६।१८९
आढाइ जाव भोगं	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१।१९।३०	१।८।१७०
आढायंति ०	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायंति जाव संलवेंति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढाविय	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पव्वयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पव्वयामि	१।१९।१२	१।१।१०१
आरोग्गतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२९	१।१।२०
आलंबे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्टंति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१९।४२	१।९।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्जं जाव सव्विदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय०	१।१२।१९	१।१२।४
आसिय जाव गंधवट्टिभूयं	१।५।९७	१।१।३३
आसिय जाव परिगीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५।८।१५९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	१।१६।२८९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पव्वयामो	१।८।१३	१।५।९०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहेवच्चं जाव विहरइ	१।३।८	१।१।११८
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१८।२०	१।५।६
आहेवच्चं जाव विहरसि	१।१।१५७	१।५।६
इट्ठा जाव मणामा	१।१६।७०	१।१।४६
इट्ठा तं चेव	१।१६।४८	१।१६।४७
इट्ठाहिं जाव आसासेइ	१।१६।१३१	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव एवं	१।८।२०३	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।८।६७	१।१।४८
इट्ठाहिं जाव समासासेइ	१।१।५०	१।१।४६
इट्ठे जाव से णं	१।५।२०	१।१।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	१।८।७९;१।१६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।७।६;२।१।१२	१।१।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ	१।१४।४०	१।१।१९४
इहमागए जाव विहरइ	१।५।५३	१।१।९७;१।५।५२
ईसर जाव नीहरणं	१।१४।५६	१।५।६;१।२।३४
ईसर जाव पभितीणं	१।७।६	१।५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्तं	१।१।८९;१।८।४९	१।१।२५
उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।४०	१।८।६७
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	१।१६।२०४,२०६	राय० सू० १०
उक्किट्ठाए जाए विज्जाहरगईए	१।१६।१९०	१।४।२१
उक्किट्ठाए ०फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलंजाव दुरहियासं	१।१।१६३	१।१।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कंतीए	१।१।१८७	१।१।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	१।५।१०६;१।१६।२०;१।१९।४५	१।१।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१।१६।३२१	१।१६।३१९
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ	१।५।८०	भ० २।५२;१।५।५२
उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो	१।८।१७९	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	१।२।१४	राय० सू० ९७
उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।१२८	१।१६।३७
उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण	१।८।३८;१।१६।३७	वि० १।४।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि ध मं जाव सुमिणस्स	१।१।१६	१।१।१६
उरालाइं जाव भुंजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाइं जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फासेणं	१।१२।४	१।१२।३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्टियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए	१।४।१६	१।४।११
उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसिं जाव वाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्दं	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणि जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८;१।१६।१३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं पेसेहिं परियणेणं	१।१४।७७	१।१४।७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा। नवरं इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य। धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एवं जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स	१।१८।३१,३२	१।१८।२०,२२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया	१।१६।६४-६७	१।१४।४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२।३।११	ठाणं २।३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं	१।१४।२१	१।१४।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते	१।५।११७	१।५।११७
एवं मासा वि । नवरं इमं नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस तं जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेणं अभक्खेया । धन्नमासा तहेव	१।५।७५	१।५।७३; भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोचुल्लए साडोल्लए	१।१८।८	१।१८।८
एवं सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	१।१६।२२५	१।१६।१६५
ओसन्ने जाव संथारए	१।५।१२५	१।५।११७
ओहय जाव झियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओहयमण जाव झियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं	१।१४।३८;१।१६।२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ	१।१४।३७;१।१६।६२,८७,२०७	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति	१।६।१५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि	१।१६।६४,६२,२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ	१।८।१६८;१।१४।७७;१।१७।८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे	१।१६।३२	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि	१।१७।६	१।१।३४
कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेयं	१।१६।१२	१।१।१०१
कंता जाव भवेज्जामि	१।१६।६७	१।१४।४३
कंते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।६०
कट्टु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१,२५२
कट्ठुस्स य जाव भरेंति	१।१७।२८	१।१७।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणग जाव दलयइ	१।१६।१६८	१।१।९१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सावएज्जं	१।१८।३८	१।१।९१
कणग जाव सिलप्पवाले	१।१८।३३	१।१।९१
कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया	१।१।८१	१।२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१।१३।२५	१।१३।२५
कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं	१।१६।७३	१।१।८१
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१।१।२७	१।१।३३
कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१।१।३२	१।२।६६
कयबलिकम्मे जाव रायगिहं	१।२।५८	१।१।८१
कयबलिकम्मे जाव सरीरे	१।१।६६	१।१।२७
कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकार०	१।१।४७	१।१।८१
करयल०	१।५।६८,१२३;१।८।७३,८१,९८, १५८,१६०;१।९।३१;१।१४।३१,५०	१।१।१९
करयल०	१।८।२०३,२०४;१।१६।१३७,१६१, २१६,२६४;१।१७।११	१।१।२६
करयल०	१।१६।२४६	१।१।३९
करयल अंजलिं	१।१।५८,६०	१।१।१९
करयल जाव एवं	१।१।३०;१।१६।१७०,२९२; १।१९।१३,४६;२।१।२०	१।१।२६
करयल जाव एवं	१।९।१७;१।१४।२७,२८;१।१६।४३	१।१।२१
करयल जाव कट्टु	१।१।११८;१।१६।१३३;२।१।११	१।१।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१।१६।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१।१६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१९६	१।८।१९५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१९५	१।१।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१७।२९	१।१।३९
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।८।१३१;१।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चेव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१।१६।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१४।१३	१।५।१३
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	१।१।२१	१।१।१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	१।१।३६	१।१।२६
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	१।८।१२६	१।१।४८
करयल वद्धावेइ	१।५।२०	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।८।१०५	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।१६।१५७	१।१।३६
करेइ जाव अडमाणीओ	१।१४।४१,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरंति	१।६।१५	१।२।१४
करेत्ता जाव विगयसोया	१।१८।२७	१।६।४८
करेमो तं चेव जाव णूमेमो	१।१६।२८८	१।१६।२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२।१।१२	राय० सू० ६
करेह जाव पच्चप्पिणंति	१।८।४०	१।८।५१
कल्लं	१।८।५१	१।१।२४
कल्लं जाव विहरइ	१।५।१२४	१।५।१२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	१।२।३३	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	१।२।६७	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	१।२।४५	१।२।३३
कारणेसु य जाव तहा	१।५।६०	१।१।१६
कालगए जाव प्पहीणे	१।१६।३२२	१।५।८४
कालोभासे जाव वेयणं	१।२।६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	१।१६।३०	१।१३।२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	१।१७।२२	१।१७।२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	१।१३।२०	१।१७।२३
किण्होभासा जाव निउरंबभूया	१।७।१३	ओ० सू० ४
कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	१।८।१७४	१।८।१७३
कुडवा जाव एगदेसंसि	१।७।१७,१८	१।७।१५,१६
के जाव गमणाए	१।१।१११	१।१।१०७
कोट्टपुडाण य जाव अण्णेसिं	१।१७।२२	वृत्ति
कोट्ठागारंसि सकम्म सं	१।७।२५	१।७।७
कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति	१।८।५२	उवा० १।४७;१।८।५१
कोडुंबियपुरिसा जाव एवं	१।१५।७	१।१५।६
कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव	१।१।११७	१।१।११६
कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	१।१।६२	१।१।२३
खंड जाव एडेह	१।१६।७८	१।१६।७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंतीए जाव बंभचेरवासेणं	१।१०।५	१।१०।३
खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं	१।१८।१४	१।१८।१०
खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१।१६।३६	आयारचूला १५।१४
गंध जाव उस्सुक्कं	१।८।८४	१।१।३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।१६६	१।८।१६०
गंध जाव सक्कारेत्ता	१।७।६	१।१।३०
गंधव्वेहि य जाव विहरंति	१।१६।१५२	१।१६।१५०
गज्जियं जाव थणियसद्दे	१।६।६	१।८।७१
गणनायग जाव आमंतेंति	१।१।८१	१।१।२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	१।८।६६	१।८।६६
गब्भस्स जाव विणेंति	१।२।१७	१।२।१७
गय०	१।८।६३	१।१।६७
गवलगुलिय जाव खुरधारेणं	१।६।१६	उवा० २।२२
गवल जाव एडेमि	१।६।३७	१।६।१६
गहाय जाव पडिगए	१।१८।३६	१।१८।३८
गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं	१।१८।२४	१।१८।२२
गामागर जाव अणुपविससि	१।१६।२२६	१।८।५८
गामागर जाव आहिंडह	१।१४।४३;१।१७।१७	१।८।५८
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं	१।२।२६	१।२।२७,२६
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	१।८।७६	१।८।७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१।१२।१६	१।१२।१६
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।८।१६	१।१।१६५
चउत्थ जाव विहरइ	१।५।१०१;२।१।३३	१।१।१६५
चउत्थ जाव विहरंति	१।८।१७,२५	१।१।१६५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२।४।१	२।२।१
चंपगपायवे०	१।१८।४६	१।१।१०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१।१।६७	१।१।३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१।१५।७	१।१५।६
चरमाणा जाव जेणेव	१।२।६६	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव	१।५।१०	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ	१।५।१०८	१।१।४
चवलं० नहेहिं	१।४।१७	१।४।१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१।१४।३३,३४	१।१।७६-७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चारुवेसा जाव पडिरूवा	१।२।८	१।१।१७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७६	१।८।७६
चिट्ठइ जाव उट्ठाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्ठइ जाव संजमेणं	१।१।१६३	१।१।१५१
चित्तेह जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरूवं	१।२।६६	१।१।४
चेइए जाव विहरइ	१।१।६४	१।१।४
चेइए जाव संजमेणं	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडंगे	१।१८।३०	१।१८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१८।२८	१।१८।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१३।३६	१।१३।३६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१६।१०८	१।१६।१०६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए	१।१६।१०७	१।१६।१०६
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	१।१६।१०५	१।१।१६५
जणवयं जाव नित्थाणं	१।१८।३२	१।१८।२२
जहा पोट्टिला जाव परिभाएमाणी	१।१६।६२	१।१४।३८
जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलिय सरीरे जाए	१।१६।२४-२६	१।५।११४-११६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१७।११	१।८।७२
जहा महब्बले जाव परिवड्ढिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए	१।१७।६	१।६।६
जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१६	आ० सू० १६;वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए	२।१।४०	राय० सू० ७६७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए	१।१६।२०	१।५।१०६
जायं च जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१४।४६	१।५।४७
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे	१।१२।२३	१।१२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासइ	१।५।१७	१।१।६६
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३,६४	राय० सू० ६६३;१।५।४७
जाव हावभावं	१।८।१२१	१।८।११७

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१।१६।२१९	१।२।१४
जोव्वणेण य जाव नो खलु	१।८।१५४	१।८।९०
झोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेंति जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिंभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६;१।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव बहूहिं	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्झयणस्स उक्खेवओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२।३।१२	२।१।६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३,१४४	१।१६।१३४-१४१
तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०७	१।१।१०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१८।५२	१।१८।५१
तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वण्णओ	१।८।२९	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११
तच्चं दूयं चंपं नयरिं। तत्थ णं तुम कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमं दूयं हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतरायं करयल जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरं रायं करयल जाव समोसरह । सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं । तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह । अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं । तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह । नवमं दूयं विराटं नयरिं । तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं दूयं अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।	१।१६।१४५	१।१६।१३२-१३४
तच्चं पि जाव संचिट्ठइ	१।१९।३५	१।१९।३५
तच्चा जाव सब्भूया	१।१२।३१	१।१२।१९
तणकूडे०	१।१४।७७	१।१४।७६
तत्थे जाव संजायभए	१।१।१६८	१।१।१६०
तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे	१।८।१८१	१।१।१९०
तलवर जाव पभितओ	१।१४।६५	१।५।६
तलवर जाव सत्थवाह	१।५।६	ओ० सू० ५२
तहत्ति जाव पडिसुणेंति	१।५।१३	१।१।२६
तहारूवेहिं जाव विपुलं	१।१।२१५	१।१।२०६
तहेव जाव पहारेत्थ	१।८।१३६,१३७	१।८।९९,१००
तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं	२।१।५१-५४	२।१।३२-४४
तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडाग पासइ २ त्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता	१।५।२८,२९	१।१।१२९,१४४,९९
ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं	१।१६।३२६	१।१।२१२
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।१९।३४	१।१९।२९
तिग जाव पहेसु	१।५।२६	१।१।३३
तिग जाव बहुजणस्स	१।१६।२६	१।५।५३
तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे	१।६।४	१।६।४
तुट्ठी वा जाव आणंदो	१।२।६४	१।२।६३
तुब्भण्णं जाव पव्वयामि	१।१२।४३	१।१।१०४
तुरियं जाव वेइय	१।८।१६६	१।४।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं	१।१६।१५५	१।१।२२
तेसिं जाव बहूणि	१।१७।६	१।८।७१
थलय०	१।८।४९	१।८।३०
थलय जाव दसद्धवण्णं	१।८।३१	१।८।३०
थलय जाव मल्लेणं	१।८।३२	१।८।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	१।५।८०	१।५।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	१।८।८	१।८।१२
थेरा जाव आलित्ते	१।१६।३१५	१।१।१४९
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१८	सूय० २।२।७८
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२४	१।३।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	१।८।१४१ १५२	१।८।१४०
दारियं जाव झियायमाणि	१।१६।६४	१।१६।६२
दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी	१।८।१४७	१।८।१४६
दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं	१।१६।२९९	१।१६।२९७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	१।१।२०	१।१।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	१।२।७६	१।२।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।८।१२९	१।८।११९
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	१।१७।१३	१।१।१०२
दुरुहंति जाव कालं	१।१६।३२३	१।१६।३२३
दुरूढा जाव पाउब्भवंति	१।८।१४	१।५।९१
दूइज्जमाणा जाव जेणेव	१।१६।३२१	१।१।४
दूइज्जमाणे जाव विहरइ	१।१६।३२०	१।१।४;१।१६।३१९
देवकन्ना	१।८।१५४	१।८।८६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।८।८६,१११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।८।१२८	१।८।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	१।१६।२४	१।१।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	१।१६।३२३	१।१६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।८।७९	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	१।१६।२६५'	१।५।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए	१।१९।३४	१।१९।२९
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	१।१६।२४२	१।१६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	१।१९।२९	१।१९।२९
देवी जाव पंडुस्स	१।१६।३०१	१।१६।२९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवी जाव पउमनाभं०	१।१६।२३६	१।१६।२३३
देवी जाव साहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निग्गंथाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मल्लीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
धण कणग जाव परिभाएउं	१।१।९२	१।१।९१
धण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।९१
धण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।९१
धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
धम्मं सोच्चा जं नवरं	१।५।८७	१।१।१०१
धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं, अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं णो संचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६९५
धम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
धोवसि जाव आसयसि	२।१।३५	२।१।३४
धोवेइ जाव आसयइ	२।१।३८	२।१।३४
धोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११९	१।१६।११४
धोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया	१।८।२२४	जंबू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	१।८।९७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।९९
नट्टा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्ठमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरिं अणुपविसइ	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।९।१,२	२।२।१,२
नवरं तस्स	१।७।२८,२९	१।७।८,२५,२६
नाइ०	१।५।२६;१।७।६,९,२२,२६,४२;१।१५।११;१।१६।५०,५४;१।१८,५१,५६	१।१।८१
नाइ०	१।१४।१८;१।१५।१९	१।५।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१।७।२५	१।७।६
नाइ जाव आमंतेइ	१।१४।५३	१।७।६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१।२।१६	१।२।१२
नाइ जाव परियणं	१।१४।१६	१।१।८१
नाइ जाव परियणेण	१।६।४८	१।१।८१
नाइ जाव परिवुडे	१।१६।५०	१।५।२०
नाइ जाव संपरिवुडे	१।१३।१५;१।१४।५३	१।५।२०
नामं वा जाव परिभोगं	१।१६।६७	१।१४।३६
नाम जाव परिभोगं	१।१४।३७	१।१४।३६
नासानीसासवायवोज्झं जाव		
हंसलक्खणं	१।१।१२८	आयारचूला १५।२८
निक्खेवओ	२।४।६	२।१।४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२।२।८	२।१।४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२।४।६	२।१।६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२।१०।७	२।१।६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।३।८	२।१।४५
निक्खेवओ बिइयवग्गस्स	२।२।१०	२।१।६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	१।१६।२३	१।१।२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१।५।१२४	१।५।११४
निग्गंथी वा	१।१८।६१	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१।७।२७;१।१०।३;१।११।३,५	१।२।६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१।२।७६	१।२।६८
निग्गंथो वा	१।१७।२५,३६	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१।१५।१४	१।३।२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१।५।१२६	१।२।७६
निद्धियं जाव विज्झायं	१।१।१८४	१।१।१८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे	१।१८।५४	१।२।३२
नियग०	१।७।६	१।१।८१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	१।१।१६७	१।१।१५६
निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ	१।१६।३६	राय० सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुण्णाया	१।१४।५०	१।१।१०४
निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं		
रज्जे ठावेमि	१।८।८	१।५।८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	१।१६।१६८	१।१६।१८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निस्संचारं जाव चिट्ठंति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।६।१६
नीलुप्पल जाव असि	१।१४।७३	१।६।१६
नीलुप्पल जाव खंधंसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पंचअणगारसया बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पंचमवग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव बत्तीसं	२।५।१,२	२।२।१,२
पंचमे जाव भवियव्वं	१।७।३३	१।७।२५,६
पंचवण्णं जाव पूरियं	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं	१।५।४५-४७	वृत्ति; ओ० सू० १२०,१६२
पंडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पंथएणं जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभद्दए जाव विणीए	१।१।२०६;१।१६।२४	ओ०सू०११६
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसिं	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिबुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिबुद्धि जाव जियसत्तुं	१।८।३६	१।८।२७
पडिबुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३६
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता	१।१६।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३;२।८।३;२।६।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूवं	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पण्णत्ते जाव सग्गं	१।५।६०	१।५।५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पतिवया जाव अपासमाणी	१।१६।६२	१।१६।५९
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	१।७।१५	१।७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१।११।२	१।११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१।१६।१७१	१।१६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	१।५।३३	१।१।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१।१५।१४	१।२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	१।८।१३१	१।८।१०७
परिणमंति तं चेव	१।१२।१७	१।१२।९
परिणममाणा जाव ववरोवेंति	१।१५।१५	१।१५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१।१३।३५	१।१।९०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१।१४।८३	१।१।१९०
परितंता जाव पडिगया	१।१३।३१	१।४।१९
परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१।३।१९	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१।१।४८	१।१।४८
पल्लंसि जाव विहरंति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिसेहित्था	१।१६।२५६	१।८।१६५
पवर जाव भीए	१।१८।४४	१।१८।४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१।१६।२५३	१।८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१।५।१०४,१०५	१।५।८३,८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०,३१	१।१।१५०,१५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१।१।१९२	१।१।१५०
पसन्थदोहला जाव विहरइ	१।८।३३	१।१।६८,६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१।१।१८९	१।१।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
°पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
°पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि	१।१।१८९	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१;भ० ९।१५०,१५१
पावयणं जाव से जहेयं	१।१२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१।१।८९	१।१।८९
पासित्ता जाव नो वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
पियं जाव विविहा	१।१।२०६	भ० २।५२

पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ	१।३।३१	१।१।३०
पीइमणा जाव हियया	२।१।११	१।१।१९
पीढं	१।५।११७	१।५।११०
पुच्छणाए जाव एमहालियं	१।१।१५४,१५५	१।८।१५३
पुढवि जाव पाओवगमणं	१।५।८३	१।१।२०६
पुत्तधायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	१।२।५६,६४	१।२।४०
पुप्फ जाव मल्लालंकार	१।२।१४	१।२।१२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	१।१३।१९	१।११।२
पुरापोराणं जाव पच्चणुब्भवमाणी	१।१६।९२	वृत्ति
पुरापोराणं जाव विहरइ	१।१६।११३	१।१६।९२
पुव्वभवपुच्छा एवं	२।१।५०	२।१।१५
पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ	१।१३।१५	राय०सू० १७४
पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं	१।१६।२०१-२०३	१।१६।२३७-२३९
पोसहसालाए जाव विहरइ	१।१३।१४	१।१।५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१।११।४	१।११।२
फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं	१।५।११४	१।५।११०
फासुयं पीढ जाव विहरइ	१।५।११३	१।५।११०
बंधित्ता जाव रज्जू	१।१४।७७	१।१४।७३
बहिया जाव खणावेत्तए	१।१३।१५	१।१३।१५
बहिया जाव विहरंति	१।५।११८	१।१।१९६
बहिया जाव विहरित्तए	१।५।११७	१।१।१९६
बहुनायओ एवं जहा पोट्टिला जाव उव्वलद्धे	१।१६।९७	१।१४।४३
बहूइं जाव पडिगयाइं	१।१६।१८२	१।८।१९१
बहूणि गामाणि जाव गिहाइं	१।१६।१९९	१।८।५८
बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ	१।५।३८	१।१।१९५
बहूसु जाव विहरेज्जाहि	१।९।२०	१।९।२०
बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा	१।१६।२२३,२२४	१।१६।२१३,२१४
बावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोगसमत्थे	१।१६।३०८,३०९	१।१।८४,८५
बासट्ठिं जाव उत्तरइ	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ	२।१।५५	२।१।४५
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१३।४४	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१।१।११३	१।१।१०४
भड०	१।८।६४	१।८।५७
भवणवइ० तित्थयर०	१।८।३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं	१।१४।८२	१।५।८०
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	१।८।२०४;२।१।२७	१।१।१०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	१।१२।४०	१।१।१०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	१।८।१८६;१।१६।३१०	१।१।१०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२।४।८	ठाणं० २।३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१।१६।२४०	१।१६।२५४
भाव जाव चित्तेउं	१।८।११८	१।८।११७
भासासमिए जाव विहरइ	१।५।३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१।१२।३९	१।५।२१
भीए जाव संजायभए	१।१४।६९	१।१।१६०
भीया जाव संजायभया	१।९।२५,२७	१।१।१६०
भीया वा	१।८।७९	१।८।७३
भीया संजायभया	१।८।७२	१।१।१६०
भुंजावेंति जाव आपुच्छंति	१।८।६६	१।८।६६
०भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	१।१२।४	१।२।१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	१।१९।२२	१।५।११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	१।१।६९	१।१।१७
भोगभोगाइं जाव विहरति	१।१६।१८३	१।१।३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	१।१६।२०८	१।१।३२
मइविकप्पणाहिं जाव उवणेंति	१।१६।२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्झेणं जाव सयं	१।१६।१६६	१।१६।२१८
मट्टियाए जाव अविरघेणं	१।८।१४३	१।५।६०
मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता	१।६।४	१।६।४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१।१२।८	१।१२।४
मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए	१।८।४१,४२	१।८।४१
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	१।३।२८	१।३।२७
महत्थं०	१।८।८१	१।८।८१
महत्थं जाव उवणेंति	१।८।८४	१।८।८१
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	१।८।२०५	१।१।११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेय	१।५।९८	१।१।११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।१७।१७	१।८।८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्थं जाव पाहुडं	१।१७।१६	१।५।२०
महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं	१।१३।१५	१।५।२०
महत्थं जाव रायाभिसेयं	१।५।९२;१।१९।३७	१।१।११६
महब्बले जाव महया	१।८।१६	१।५।३४
महयाहय जाव विहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि	१।१४।७७	१।१४।७५
महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय०२।२।७३
महुरालाउयं जाव नेहावगाढं	१।१६।८	१।१६।८
माणुस्सगाइं जाव विहरइ	१।१५।१६	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाणं जाव दारियं	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारचूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव बहवे	१।७।३८	१।७।२५,११
मित्त जाव संपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्तनाइ गणनायग जाव सद्धिं	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्खं जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडावियं जाव सयमेव	१।१।१९१	१।१।१४९
मुंडे जाव पव्वयाहि	१।१९।१४	१।१।१०१
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	१।१९।२९	१।१९।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य णं जाव परमसुइभूए	१।१२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय०	१।१९।४६	१।१७।२५
रज्जं च जाव अंतेउरं	१।१९।२९	१।१।१६
रज्जे जाव अंतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अंतेउरे	१।८।१५१;१।१६।१८७;१।१९।२९	१।१।१६
रज्जे य जाव वियंगेइ जाव अंगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।९७
रयण जाव आभागी	१।१८।५६	१।१।९१;१।१८।५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहमहया	१।१६।१४७	१।८।५७
राईसर जाव गिहाइं	१।१४।४३	१।८।५८
राईसर जाव विहरइ	१।८।१४६	१।८।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	१।१४।५६	१।१४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया	१।८।१३९	ओ० सू० ९७
रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।२००	१।८।९०
रूवेण य जाव लावण्णेण	१।१६।१९०	१।८।३८
रूवेण य जाव सरीरा	१।१४।११	१।८।९०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१८।९
रोयमाणिं जाव नावयक्खसि	१।९।४०	१।९।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२९
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।९।४७	१।९।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।९।६	१।९।४
लवण जाव ओगाहेह	१।९।५	१।९।४
लवणसमुद्दे जाव एडेमि	१।९।२०	१।९।१९
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।९।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ९ वृत्ति
वण्णहेउं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१९	१।८।१९०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंभं	१।७।३३	१।७।९
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।९०
वयासी जाव तुसिणीए	१।१९।१६,१७	१।१९।१४,१५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।८।२०२	१।१।११८
वाणियगाणं जाव परियणा	१।८।६७	१।८।६६
वाबाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११

वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए	१।१।१८६	१।१।१५३
वाराओ तं चेव जाव नियधरं	१।६।४	१।६।४
वावीसु य जाव विहरेज्जाह	१।६।२०	१।६।२०
वासाइं जाव देंति	१।२।१२	१।२।१२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१।१६।१७७	१।१६।१७६
वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो	१।१६।२५८	वृत्ति
वासे जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए	१।८।१६४	१।८।१६४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१।१६।४०	१।१।१६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१।१६।२६	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	१।२।४७	१।२।४४
विणिम्मुयमाणी २ एवं	१।५।३३	१।१।१४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१।१३।३०	१।१३।२६
सइं वा जाव अलभमाणा	१।६।२२,२४	१।६।२१
सइं वा जाव जेणेव	१।६।२३	१।६।२१
संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं	१।८।८४	१।८।८१
संकिए जाव कलुससमावण्णे	१।३।२४	१।३।२१
संगयगयहसिय०	१।३।८	१।१।१३४
संचाएइ जाव विहरित्तए	१।५ ११८	१।५।११७
संचाएंति० करेत्तए ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति	१।४।१४,१५	१।४।११,१२
संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ	१।८।८२	१।८।८१
संता जाव भावा	१।१२।३२	१।१२।३१
संताणं जाव सब्भूयाणं	१।१२।२६	१।१२।१६
संते जाव निविण्णे	१।८।७६	१।४।१२
संते जाव भावे	१।१२।२६	१।१२।१६
संपरिवुडे एवं जाव विहरइ	१।८।१४७	१।१६।१७८
संभग्गं जाव पासित्ता	१।१६।२६३	१।१६।२६२
संभग्गं जाव सण्णिवइया	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संभग्गं तोरण जाव पासइ	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए	१।१४।५३	१।१।१४५
संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि	१।५।८६	१।१।१४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	१।८।५७	१।१।६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवरचामराहिं महया	१।८।१६१	१।८।५७
सकोरेंट० सेयचामर हयगयरहमहया- भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता	१।१६।१५३	१।८।५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकोरेंट हयगय	१।१६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव नन्नत्थ	१।५।२५	१।५।२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१।१।६४	१।१।५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१५।१६	१।३।२४
सण्णद्ध०	१।१६।२४८	१।२।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१।१६।१३४;१।१८।३५	१।२।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१।१६।२५१	१।२।३२
सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह०	१।१६।२३६	१।२।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।६।३७	१।६।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१।१।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१।१६।३१	१।१६।३१
सद्द जाव गंधाणं	४१।१७।२	१।१७।२२
सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे	१।५।६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएंति	१।१५।१३	१।१।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।६६,१००	१।८।६२,६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६,७,६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२,११३	१।८।६६,१००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५,१५६	१।८।६६,१००
सद्दावेह जाव सद्दावेंति	१।१।१३६	१।१।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	१।३।१६	१।३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१।१।१०७	१।१।१०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०८,११२	१।१।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५,४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१।१०।५;१।१८।४८;१।१६।४२,४७	१।३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।६।५३	१।६।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	१।५।११८	१।५।११७
समणाणं जाव वीईवइस्सइ	१।३।३४	१।२।७६
समणाणं जाव सावियाण	१।१७।३६	१।२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१९६,१९७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१।१६।१४०	ओ० सू० ६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणा जाव चिट्ठंति	१।१५।१०	१।१५।६
समाणी जाव विहरित्तए	१।२।१७	१।२।१७
समोवइए जाव निसीइत्ता	१।१६।२२७,२२८	१।१६।१६७,१६८
समोसरणं	१।५।८५	१।१।४
सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	१।१।३३	१।१।२२
सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं	१।३।६	१।१।२२
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।३००	१।१४।१६
सयमेव० आयार जाव धम्ममाइक्खइ	१।१।१५०	१।१।१४६
सरिसगं जाव गुणोववेयं	१।८।१२०	१।८।४१
सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि	१।१।१०६	१।१।१०८
सव्वओ जाव करेमाणा	१।१६।२३	१।१६।२३
सव्वं तं चेव आभरणं	१।५।३०-३२	१।१।१४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेणं	१।१।३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए	१।१४।५६	१।१४।५६;१।१।१६
सहइ जाव अहियासेइ	१।११।३	१।११।५
सहजायया जाव समेच्चा	१।८।१०,११	१।३।६,७
सहियाणं जाव पुव्वरत्ता०	१।५।११८	१।३।७
साइमं जाव परिभाएमाणी	१।१६।६३	१।१६।६२
सामदंड०	१।८।४५;१।१४।४	१।१।१६
सालइएणं जाव नेहावगाढेणं	१।१६।२५,२६	१।१६।८
सालइयं जाव आहारेसि	१।१६।१६	१।१६।१६
सालइयं जाव गोवेइ	१।१६।८	१।१६।८
सालइयं जाव नेहावगाढं	१।१६।१६;१६,२०	१।१६।८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	१।१६।२२	१।१६।८
सालइयस्स जाव एगंमि	१।१६।१६	१।१६।१६
साहरह जाव ओलयंति	१।८।६२	१।८।४८
सिंगारा जाव कुसला	१।१।१३६	१।१।१३४
सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ	१।१।१३५	१।१।१३४
सिंघाडग०	१।५।५३	१।१।३३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।३।३३;१।१३।२६;१।१६।१५३;१।१८।१६	१।१।३३
सिंघाडग जाव बहुजणो	१।७।४१;१।८।२००;१।१३।२६	१।५।५३
सिंघाडग जाव महया	१।१।६५	ओ० सू० ५२
सिक्खावइए जाव पडिवण्ण	१।१३।३६	उवा० १।४५
सिज्झिहिइ जाव मंतं	१।१५।२१	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण०	१।१६।४६	१।१।२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	१।५।८४	ठाणं १।२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	१।८।७४	१।८।७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए	१।८।७७,७८	१।८।७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	१।८।६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।३५	१।८।६७
सुइं वा०	१।६।३७	१।२।२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१।१६।२१५	१।१६।२१२
सुइं वा जाव लभामि	१।१६।२२१	१।१६।२१२
सुई वा जाव उवलद्धा	१।१६।२२६	१।१६।२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	१।५।८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१।१५।१३	१।१५।११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	१।८।२६	१।१।३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुबूहति	१।१।३१	१।१।२६
सुरं च जाव पसन्नं	१।१८।३३	१।१६।१४६
सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ	१।१६।३१६	१।१६।३१८
सुरूवा जाव वामहत्थेणं	१।१६।१६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं	१।१६।३०५,३०६	१।१६।३३,३४
सूमालिया जाव गए	१।१६।८७	१।१६।६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१।१६।१३	१।१।१०४
सेयवर हयगय महया भडचडगरपहकरेणं	१।१६।२३७	१।८।५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१।१६।८१-८६	१।१६।५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१।१८।६१	१।१।१०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१।१८।४८	१।१।१०६
हए जाव पडिसेहिए	१।१६।२५७	१।८।१६५
हट्ठ जाव हियया .	२।१।२०,२१,२४,२५	१।१।१६
हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१।१।२३	१।१।१६,२२
हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए	१।५।१३	१।१।२६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।१।२०;१।१६।१३५	१।१।१६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	१।७।६	१।७।६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१।१६।१४६	१।१६।१४६
हत्थिखंधवरगए जाव सेयवरचामराहिं	१।८।१६३	१।८।५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१।१६।२०३	१।१६।२००
हत्थी जाव छुहाए	१।१।१८५	१।१।१५७

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	१।१।१६८	१।१।१५७
हत्थीहि य जाव संपरिवुडे	१।१।१५८	१।१।१५७
हयगय०	१।१६।२४८	१।८।५७
हयगय जाव पच्चप्पिणंति	१।१६।१३६	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	१।१६।१५६	१।८।५७
हयगय जाव रवेणं	१।१।६६	१।१।६७
हयगय जाव हत्थिणाउराओ	१।१६।३०३	१।८।५७
हयगय संपरिवुडे	१।१६।१७४	१।८।५७
हयगया जाव अप्पेगइया	१।१६।१३८	१।५।१५
हय जाव सेणं	१।८।१६२	१।८।५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८५	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	१।८।१६६;१।१६।२५६	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	१।१६।२८६	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	१।१८।४२	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	१।१८।२४	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेंति	१।१८।४१	१।८।१६५
हरिसवस०	१।१।१६१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	१।१।१२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	१।१३।३८	ओ०सू० ५२
हिरण्णं जाव वइरं	१।१७।१६	१।१७।१६
हिरण्णागरे य जाव बहवे	१।१७।१८	१।१७।१४
हीलणिज्जे०	१।४।१८	१।३।२४
हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो	१।५।१२५	१।३।२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	१।१६।११८	१।६।११७
हीलेंति जाव परिभवंति	१।१६।११७	१।३।२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
इड्ढा जाव विहरइ	१।१।१७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी	७।१७	७।१०
अंतियं जाव असिं	५।२,२१	३।२०,२१

अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्ठेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	६।३,४;१०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्ठहिरण्णको- डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठहि वड्ढि अट्ठहि सकंसाओ पवि अट्ठवया दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४;४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१,२२,२३;७।२३,२४	६।२०
अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१६६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव झूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७६	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२६,३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०;३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८,३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ	६।५-१५	२।५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

आओसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स	२।१९	१।६०
आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं	१।७८	ठा० ३।३४८
आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव जहारिहं	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिहं	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्मं	१।७७	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८;३।४५;८।४६	वत्ति अ० ३
इट्ठे जाव पंचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इड्ढी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेणं जाव धम्मणिसंतए	१।६५	१।६४
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१;४।१;५।१;६।१;७।१;८।१;९।१;१०।१	२।१
उज्जलं जाव अहियासेइ	२।३३,३९;३।२६	वृत्ति
उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जलं जाव दुरहियासं	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियना	६।२१,२३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियना	६।२१,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं	६।२३	६।२०
उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१;७।२३	६।२०
उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं । नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेसं जहा चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चए विमाणे उववानो जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णनाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाइं जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१९
उरालाइं जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६;८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव ववरोविज्जसि	४।४१	४।३९
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच सोल्लया। तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५९	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्तिं	६।३३,३४	२।१८,१९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५.५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७;७।१२	ओ० सू० २२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लं विउलं	१।५७	१।५७
कामदेवा जाव जीवियाओ	२।४५	२।२२
कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ	२।३०,३१	२।२२,२३
कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	२।३-६	१।११-१४
कासे जाव कोढे	४।३९	वृत्ति
कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	६।३-६	२।३-६
कुडुंब जाव इमेयारूवे	८।१८	१।६५
कुडुंबस्स जाव आधारे	१।५७	१।१३
केणट्ठेणं एवं	७।४९	७।४८
कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	७।३४	१।४८
गिहाओ जाव सोणिएण	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव आइंचइ	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ	३।४४	३।४२
गिहिणो जाव समुप्पज्जइ	१।७६,७७	१।७६
गुण जाव भावेमाणस्स	६।१८	२।१८
गुरु जाव ववरोविज्जसि	३।४४	३।४१
घाएत्ता जहा कयं तथा चिंचिनेइ जाव गायं	३।४२	३।२१
घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयंसि पि जाव अहियासेइ	३।२७-३८	३।२१-२६
चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । सेसं तहेव जाव सिज्झिहिति	५।५२	२।५५,५६
चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाह-स्सिएणं वएणं । बहुला भारिया	५।३-६	४।३-६
चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ	२।४३	भ० १२।१
जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ	८।१०-१५	१।१९-२४
जाए जाव विहरइ	६।१६,१७	२।१६,१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।५६	१।५५
जाव पज्जुवासइ	७।१४	१।१६
जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए	७।५०	राय० सू० १२
जेट्ठपुत्तं जाव कणीयसं जाव आइंचइ	४।४२	३।४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए।	१।५७	१।५७
णमंसइ जाव पज्जुवासइ	१।२	ओ० सू० ५२
णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ	७।१५	ओ० सू० ५२
णाइदूरे जाव पंजलियडा	७।३५	१।२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	१।५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७।१५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	१।२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७।३५	ओ० सू० २०
तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ	१।५७	१।५७
तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि	५।४१	५।४०
तत्थ णं वाणारसीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिप० अट्ठपवित्थरप०। अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो		
ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३।३-६	२।३-६
तव जाव कणीयसं	३।४५	३।४४
तिक्खुत्तो जाव वंदइ	७।३५	१।२०
तीसे य जाव धम्मकहा सम्मत्ता	२।४४	२।११
तुमं जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि	७।७५	२।२२
देवराया जाव सक्कंसि	२।४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं	७।३१	१।४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७।४६	७।४४
धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं	७।५०	७।५०
धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७।५१	७।५०
नाममुद्दगं च तहेव जाव पडिगए	६।२८	६।२०-२४

निक्खेवो	२।५७;३।५३;४।५३;५।५४; ६।४१;७।८६;८।५४;६।२७	१।८५
निक्खेवो पढमस्स	१।८५	वृत्ति
नीणेमि एवं जहा चुलणीपिय, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि	५।२१-३७	३।२१-३७
नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ जाव कणीयसं घाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ	७।५७-७३	३।२१-३८
नीलुप्पल जाव असिं	२।४५;३।२१,४४;४।२१	२।२२
नीलुप्पल जाव असिणा	२।२२,२६	२।२२
पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं	१।७६	१।६६
पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि	८।३३,३४	१।६२,६३
पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि	३।४८,४६	१।६२-६३
पाउणित्ता जाव सोहम्मे	१।५३	१।८४
पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि	७।११	१।४५
पावयणं जाव जहेयं	७।३७	१।२३
पीढ जाव ओगिण्हित्ता	७।५२	१।४५
पीढ जाव संथारएणं	७।५१	१।४५
पीढ जाव संथारयं	७।१८	१।४५
पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए	७।१८	१।४५
पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे	२।४०	२।४०
पुत्तं जाव आइंचइ	७।७८	३।४२
पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं	४।४४	३।४४
पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं	१।६५	१।५७
पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स	७।५४	२।१८
पोसहिए०	१।६०	ना० १।१।५३
फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरइ । नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव संथारयं	७।१६	१।४५
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२।४०	१।६०
बंभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
बहूहिं जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूणं राईसर जहा चिंतियं जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहिं जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अहं	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्ढमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३;७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७;७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५६	१।५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चं पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वंदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४९	७।४६
विहरइ । तए णं	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ । धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइं परियागं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ	९।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं	८।२५,२६	२।१८,१९
संचाएइ जाव सणियं	२।३४	२।२८
संताणं जाव भावाणं	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
संतेहिं जाव वागरिया	८।४९	८।४९
सखिंखिणियाइं जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सद्दहामि णं जाव से जहेयं	१।२३	रा० सू० ६९५
सद्दालपुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जंबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६; ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ तं महाफलं गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवासए जाव विहरइ	४।४०;५।३८	३।२२
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि	३।४४;७।७५	२।२२
समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भंजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया ! जाव न भंजेसि	२।३४;५।२१,३९	२।२२
समणोवासया ! तं चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया ! तं चेव भणइ सो जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया ! तहेव जाव गायं आइंचइ	३।४४	३।२३-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३६
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिंतेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ । तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ । साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२।७-१६	१।१७-२३,५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए	३।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति	५।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सव्वेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसिं	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३६	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३६
सीलव्वय-गुणेहिं जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं वयाइं न छड्डेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५,३५	१।४६
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स धन्नाभारिया। सामी समोसढो जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं जहा कामदेवो जाव समणस्स	४।३-१६	१।११-१४;२।७-१६
सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ	२।३६,३७	२।३४,३५
हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव जाव अणाढायमाणे	८।२६,३०	८।२७,२८
हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी	१।२३	ओ० सू० ८०
हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं	१।५१,५२	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठ जाव समणं	२।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।७४;८।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवरं एगा-हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगाहिरण्ण-कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं	७।३०,३१	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ	१।४६-४६	ओ० सू० ८०; भ० ६।१४१-१४३; उवा० ७।३३
हट्ठतुट्ठा समणं	७।३७	१।५१
हणेसि वा जाव अकाले	७।२६	७।२५
हारविराइयवच्छं जाव दसदिसाओ	२।४०	ओ० सू० ४७
हेऊहि य जाव वागरणेहि	७।५०	६।२८

अंतगडदसाओ

अंतिए जाव पव्वइत्तए	३।७६	३।२०
अज्जा जाव इच्छामि	८।२०	८।७
अणगारे जाए जाव विहरइ	६।५२	ना० १।५।३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरे जाव केवल०	३।६२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८६	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८६
अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्तं जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणाहिं०	६।६५	नाभ १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१।१६	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८६-९२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०९
उच्च जाव अडमाणा	३।२९,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२९	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।९९
उज्जला जाव दुरहियासा	३।९०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेणं जाव धमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३।९८	३।६१
ओहय जाव झियाइ	५।१७	३।४३
ओहय जाव झियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२;६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०९
कुमारस्स	१।१९	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाणं	८।६	५।३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ जाव भावेमाणी	८।३३	५।३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।२१	५।३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवग्रो	४।७	१।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति	३।२१	३।२०
जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स	३।१७	३।३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस	६।१,२	१।५,६
जइ णं भंते अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव दस	८।१७,१८	१।५,६
जइ णं भंते तेरस	७।३	१।७
जइ णं भंते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव तेरस	७।१,२	१।५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३।१	१।५
जइ दस	८।१६	१।७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।१,२	१।५,६
जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स		
अट्ठमभत्तं पगेण्हइ जाव अंजलिं	३।४७-४६	ना० १।१।५३-५८
जहा गोयम सामी तहा पडिदंसेइ	६।५७	भ० २।११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३।२२	भ० २।१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६।५३	६।५३
जाव संलेहणाकालं	८।३६	८।१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३।४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३।३६	ओ० सू० २०
तं महा जहा गोयमे तहा	३।१३	१।१६,२०
तीसे य धम्मकहा	३।६२	राय० सू० ६६३
तीसे य धम्मकहा	६।५०,८८	ना० १।१।१००
देहं जाव किलंतं	३।६५	वृत्ति
धारिणी सीहं सुमिणे	३।११६	१।१७
नमंसामि जाव पज्जुवासामि	६।३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३।२२	भ० २।१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३।११२	३।३
निग्गया जाव पडिगया	१।२	ना० १।१।५
निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव		
तमाणाए तहा जाव संजमइ	३।७८-८५	भ०११।१६८;ना०१।१।११५-१५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइय जाव उववज्जंति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०सू० ६६३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पासंसि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
बारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगवं जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए बारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०;५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१,२२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूबरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाणं जाव बत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६।२८	५।१६
सिद्धे जाव प्पहीणे	३।६२	वृत्ति
सिरिवणे विहरइ	६।७५	६।३३
सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे	६।३६	ओ० सू० ५३
सोच्चा	१।१६	ना० १।१।६६
सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले	३।६३-७३	ना० १।१।१०१-१०७;११०-११३
हट्ठ	६।५१	ना० १।१।१०१
हट्ठ जाव हियया	३।२५	ओ०सू०२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।४२	३।२५

अणुत्तरोववाइयदसाओ

अंबगठिया इ वा एवामेव	३।४५	३।३१; वृत्ति
अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे	३।२७	अं०६।५७
आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति	३।२४	३।२२
इमासिं जाव साहस्सीणं	३।५६	३।५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३।३३	३।३१
इ वा जाव सोणियत्ताए	३।३६	३।३१
उच्च जाव अडमाणे	३।२४	भ० २।१०६
उण्हे जाव चिट्ठइ	३।३५	३।३४
उरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३।३०	भ० २।६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३।३५	३।३१
एवं जाव सोणियत्ताए	३।३४	३।३१
एवामेव०	३।३६-४४,४६,४७,४६,५०	३।३१
गोयमे जाव एवं	१।१०	भ० २।७१
चंदिम जाव नवय०	३।५६	१।८
जहा खंधओ तहा जाव हुयासणे	३।५२	भ०२।६४; ना०१।१।२०२

जहा जमाली तहा निग्गओ। नवरं पायचारेणं।
जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि।
तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं आपुच्चइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए अणगारे जाए—इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	३।११-२१	भ० ६।३३,११,११; ना० ११,१।५
जाव उप्पि पासा विहरइ	१।७	ना० ११।६३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
बिलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुंडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुंडे जाव पव्वइए	३।६६	३।२२
संजमेणं जाव विहरइ	३।६६	३।२७
संजमेणं जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुक्कं०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० ११।२११

पण्हावागरणाइं

अंतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एवं जाव इमस्स	५।१०	५।१
एवं जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एवं जाव परियट्टंति	५।८	४।१३
पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०	४।१५	४।१
रूसियव्वं जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रूसियव्वं जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सइं	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सतिं	१०।१६	१०।१४
हीलियव्वं जाव पणिहिदिए	१०।१६	१०।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुयं

अट्ठमस्स उक्खेवओ	१।८।१,२	१।२।१,२
अट्ठि जाव महियगत्तं	१।४।२८	१।२।६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१।१।२८	वृत्ति
अद्धहारं जाव पट्टं मउडं	१।६।८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव	१।७।७	अं० ६।५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	१।२।२४	ना० १।१।३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं	१।३।१३	१।२।१४
अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि	१।२।२६	१।२।२४
असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरपत्तेहि	१।६।२३	१।६।१९
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे	१।१।४७;१।३।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	१।३।७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	१।१।७०	वृत्ति
अहापडिरूवं जाव विहरइ	१।१।२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे	१।१।३९	ना० १।८।४२
अहीण जाव जुवराया	१।६।२	१।५।४
अहीण जाव सुरूवा	१।२।७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	१।२।१०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	१।२।१६	१।१।४२
आसी जाव विहरइ	१।३।१६	१।१।४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।३।४१	१।२।६४
आसुरुत्ते जाव साहट्टु	१।६।३५	१।२।६४
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।२।७;१।३।७	वृत्ति
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।१९	ना० १।१।९६
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।२०	ना० १।१।९७
इट्ठरूवे जाव सुरूवे	२।१।१५	२।१।१५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।६।३४	१।१।४१
इरियासमिए जाव बंभयारी	१।१।७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२।१।३१	ओ०सू० २१
उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए	१।७।३४	१।२।५६
उक्किट्ठि जाव करेमाणे	१।३।४३	१।३।२४
उक्किट्ठि जाव समुद्द०	१।३।२४	ओ०सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।६।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।६।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	१।६।३४	१।४।३६
उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ	१।६।२६	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।६।४८	ना० १।१।६३
उस्सुक्कं जाव दसरत्तं	१।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओहय०	१।२।२७	१।२।२४
ओहय जाव झियाइ	१।२।२४;१।६।१६	वृत्ति
ओहय जाव झियासि	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
ओहय जाव पासइ	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०,५५,५६;१।६।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४;१।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।५२,५३;१।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेंति	१।३।५३,६२;१।६।३४;१।६।२०,४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेइ	१।६।४५	१।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६६
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गंगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं धण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	१।५।२७	१।२।६४
घाएंति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	१।७।१०,११	१।७।६;१।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१,२	१।२।१,२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढमं जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्ठस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं	१।२।२८	१।२।२४
जणसद्दं च जाव सुणेत्ता	१।१।१६	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसड्ढे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५;१।४।३६	१।१।७०
०ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५;१।६।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।६।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
तं चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
तंतीहि य जाव सुत्तरज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
तं महया जहा पढमं तहा	२।१।३२	२।१।१२; भ० ६।१५८
तच्चस्स उक्खेवो	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।७।१६
तीसे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो णं जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१६
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमित्ते	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	१।२।२४
नगरगोरूवाणं जाव वसभाण	१।२।२८	१।२।२४
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	१।२।२४
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो	१।२।७४;१।४।४०, १।५।३०;१।६।३८;१।७।३६;१।८।२८;१।६।६०	१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अडइ	१।७।७	१।२।१५
पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१३
पज्जेइ जाव एलमुत्तं	१।६।२३	१।६।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२९	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१,४२;१।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरूवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२,१३	१।१।४२,४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६९	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१;१।५।२८;१।७।३७;१।८।८,२६;१।९।५८; १।१०।१८	१।१।४१
फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।९३
बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहिं	१।२।२६	१।२।२४
बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
बहूहिं जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव जओ णं	१।१।३४	१।१।३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ	२।१।३५	२।१।१३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१।२।१५	भ० २।१।१०
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४९	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारियं	१।९।३१	१।२।३१
मासाणं जाव पयाया	१।७।२९	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०;१।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१९
मित्त जाव अण्णाहिं	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणं	१।९।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।९।५७	१।२।३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्त जाव परिवुडा	१।२।५४	१।२।३७
मित्त जाव परिवुडाओ	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव परिवुडे	१।३।५५	१।२।३७
मित्त जाव महिलाओ	१।७।२६	१।७।१६
मित्त जाव सद्धिं	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव सद्धिं	१।६।४५	१।२।३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१।१।२६	१।१।१५
मुंडा जाव पव्वयंति	२।१।३१	२।१।१३
रट्ठं च	१।१।५७	१।१।५७
रट्ठे य जाव अंतेउरे	१।१।५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अहं	२।१।१३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	१।२।७२	१।१।५०
राईसर जाव प्पभियओ	१।१०।७	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाह०	१।५।२२,२३	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१।५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्थवाहेहिं	१।६।५७	१।१।५०
राया जाव शीईवयमाणे	१।६।३७	१।६।३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	१।६।२३	१।६।१६
संगयगय०	१।२।७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसभाण	१।२।२४	१।२।२०
सण्णद्ध जाव पहरणे	१।२।२८	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं	१।३।४७	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा०	१।३।२४	१।२।१४
सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि	१।६।२३	१।६।२२
समणे जाव विहरइ	१।१।२०	ना० १।१।६७
समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	१।४।२२-२४	१।२।५७-५६
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	१।३।१५	१।२।१५
सागरोवम०	१।१।७०	१।१।५७
सिंघाडग जाव एवं	१।१०।१३	१।१।५३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।२।५७;१।८।२१;२।१।२३	१।१।५३
सुंदरथण	१।२।७	वृत्ति
सुबहुं जाव समज्जिणित्ता	१।८।१३;१।६।१२६;१।१०।८	१।१।५१
सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं	२।१।१०,११	ओ०सू० १४८,१४६
हट्ठतुट्ठहियया	१।१।२६	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	१।३।५०	१।३।४६

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	°मणप्पत्ते	°मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेसु	जूहेसु
६०	२२	हीत्थ	हत्थी
१७७	३	कट्ठ	कट्टु
२०६	१०	विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासण्णयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१६	°समुदएणं	°समुदएण
५६८	१२	सस्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१६	६	दसं	दस
७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणंदे

पाठान्तर

१६	पा० ६	पटर्टसि	पट्टंसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org